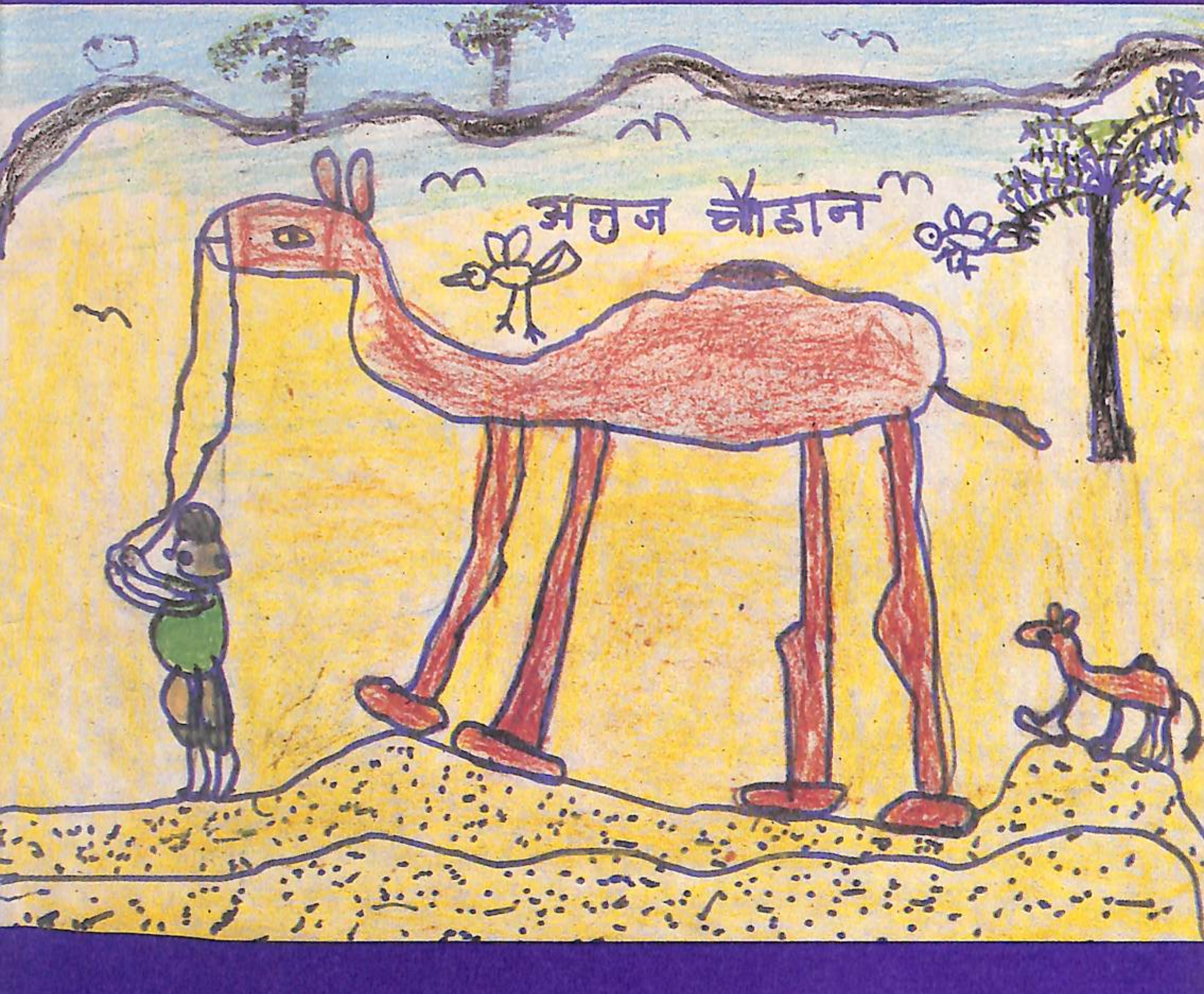
चकमक

नवम्बर, 1995

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 5.00





मेरा पन्ना अंक





टीना मिश्रा, पाँच वर्ष, भोपाल, म. प्र.



संजय पाटीदार, मानकुण्ड, देवास, म. प्र.



नुपुर तिवारी, तीसरी



आशियाना



● असीम जोसेफ, आठवीं, बेतूल, म.प्र.

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-11 अंक 5 नवम्बर, 1995
संपादक
विनोद रायना
सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
संपादन सहयोग
टुलटुल विश्वास
कला-सज्जा
जया विवेक
उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा
एक प्रति : पांच रुपए
छमाही : पच्चीस रुपए
वार्षिक : पचास रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

कागज़ : यूनिसेफ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
(म. प्र.)
फोन : 563380

123 वें अंक में ....

विशेष

● संजय पाटीदार, टीना मिश्रा, नुपुंर तिवारी, मनीष कन्नौजिया, आशियाना, असीम जोसेफ, बृजमा जायसवाल, देवनारायण, चारू अग्रवाल, शीतल साहू, सुदर्शन राठौर, सन्तोष पाटीदार, सुनील गुप्ता, मनु पाण्डे, दीपक गुप्ता, नीता अग्रवाल, सुनीता गौर, कमलेश मालाकार, मृत्युन्जय नागर, विजय किशन, शुभा आचार्य, सुन्दर लाल, आदित्य तिवारी, पूर्वा वशिष्ठ, अनुभा योएल, सपना पोरवाल, कुणाल पूरे, रामविलास बिलारे, मुरारीलाल, निलय सिंह, प्रकाश थवाइत, नितल साहेब, अंजुम, बदरूद्दीन, अंशधा सिंह, रमेश भिलाला, मीरा गोस्वामी, बृजेश द्विवेदी, सुखमनी ग्रोवर, किरण मिश्रा, सतीश कुमार नायक, ज्योति जैन, अर्चना गुप्ता, पद्‌मजा, अनिरुद्ध पटेल, वीना गोस्वामी, अनीता सोलंकी, आशीष शर्मा, पिंकी रिठारी, निधि जाधव, कबीर पटेल, भार्गव सोनेजी, अरुण विश्वकर्मा, प्रियंशा पाल, विनोद यादव, विजय रामटेके, राजेन्द्र सिंह, नारायण सिंह सोलंकी, अनीता बाजपेई, पूजा श्रीवास्तव, प्रह्लाद सोनी, छत्रपाल सिंह और मोहम्मद हनीफ के चित्र।

● ओम प्रकाश सोनी, महावीर अग्रवाल, चंपुना मानपोंग, गुरमीत सिंह सिक्ख, पूजा दुबे, बंटी कुमार, जितेन्द्र सैनी, चिन्मय मुखी, मंजुलता शर्मा, ग़रीबदास मानिकपुरी, मुकेश बड़गैयाँ, पी. देवी, महेन्द्र श्रीमाली, नीतू जैन, रूपी कुरैशी, दिलीप मिश्रा, अनिता कुम्भकार, गोविन्द सिंह चौहान, झगेन्द्र कुमार, रमेश मोरे, पद्‌मजा और पारस बाँठिया की कविताएँ।

● कैलाश हरियाले, सत्यप्रियदर्शिनी निगम, राहुल बाविसटाले, अमृतलाल खुटे, अली असगर खान, रितेश राय, देवयानी अग्रवाल, स्मिता श्रीवास्तव, योगेश जाणी, नीरज जैमिनी, सच्चितानंद द्विवेदी, दिलीप सिंह कुशवाह और हरगोविन्द बाँके की कहानियाँ।

हर बार की तरह

और यह भी

आवरण: अनुज चौहान, पहली, टिमरनी,म. प्र.

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

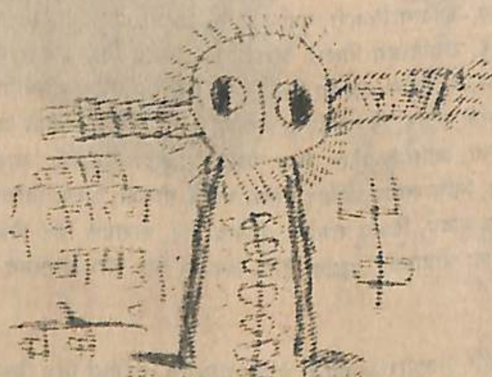


● बृजमा जायसवाल,आठवीं, झलमला, दुर्ग,म. प्र.





● सुर्दशन राठौर, पाँचवीं, लालाखेड़ी, शाजापुर,म. प्र.



● देवनारायण, तीसरी,चापड़ा, देवास, म.प्र.



● शीतल साहू, जगदलपुर,म.प्र.



● चारू अग्रवाल, भोपाल, म.प्र.



● सन्तोष पाटीदार, गुनेरी, हाटपिपल्या, देवास, म. प्र.

तुम सबके नाम एक चिट्ठी

प्रिय दोस्तो,

यह 'मेरा पन्ना' अंक है यानी, तुम्हारा अपना अंक। बधाई उन सबको जिनकी रचनाएँ इस अंक में छपी हैं। जिनकी रचनाएँ नहीं छपीं, उनको ढेरों शुभकामनाएँ। ख़ूब अच्छी-अच्छी रचनाएँ और चित्र तैयार करो और हमें भेजो। हम वादा करते हैं, तुम्हारी हर छापने लायक रचना ज़रूर छापेंगे।

तुम कहीं यह तो नहीं सोचने लगे कि हम दो तरह की बातें करते हैं? यह कि एक ओर तो बार-बार भेजने पर भी तुम्हारी रचनाएँ 'चकमक' में छपती नहीं और बार-बार हम तुमसे यही कहते हैं कि और-और रचनाएँ भेजो।

आओ, आज हम तुम्हें यह बताते हैं कि 'मेरा पन्ना' में छापने के लिए हमें क्या-क्या मिलता है। दोस्तो, कुछ चीज़ें ऐसी हैं जो दुनिया के क़रीब-क़रीब हर बच्चे को अच्छी लगती हैं। इसीलिए जब चित्र बनाने बैठे तो सबसे पहले याद आते हैं पहाड़। फिर एक नदी, नदी में नाव, एक किनारे पर पेड़, दूसरे किनारे पर झोपड़ी। पहाड़ों के बीच से निकलता सूरज, सूरज के आसपास उड़ती चिड़ियाँ। ज़्यादा ही हुआ तो एकाध गाय भी, घास चरती हुई।

इसी तरह जब कविता लिखनी हुई तो सबसे पहले याद आता है देश। देश से आगे बढ़े तो फिर 'अच्छे बच्चे, प्यारे बच्चे; अकल के कच्चे, लेकिन सच्चे' या फिर चिड़िया, तितली, मम्मी, मौसम! कहानी की भी कुछ ऐसी हालत है; पेड़ से आम तोड़े, छोटे भाई की पिटाई हुई, पड़ोसी का काँच तोड़ा या माँ से डाँट खाई और ख़ज़ाना ख़त्म। अब बताओ हम अगर 'मेरा पन्ना' में हर बार यही, यही, यही और यही छापते रहेंगे तो तुम बोर नहीं हो जाओगे? वैसे भी, तुम्हारी जो चिट्ठियाँ हमें मिलती हैं, उनमें से कुछ-एक को छोड़ कर सभी में यह शिकायत होती है कि तुम्हारी रचना या चित्र नहीं छपे। बहुत मुश्किल से ही कभी ऐसा होता है कि कोई बच्चा किसी दूसरे बच्चे की कहानी, कविता या चित्र के बारे में लिखे। क्या सचमुच तुम्हें 'मेरा पन्ना' में छपी दूसरे बच्चों की रचनाओं के बारे में कुछ नहीं कहना होता है। बहुत बार हम सोच में पड़ जाते हैं कि पता नहीं, तुम लोग 'मेरा पन्ना' पढ़ते भी हो कि नहीं? कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम सब एक-दूसरे को 'बच्चा' समझते हो।

ज़ाहिर है, हम लोग चकमक के हर पन्ने पर ऐसे ही चित्र, कहानियाँ और कविताएँ छापना चाहते हैं जिन्हें तुम सभी पढ़ो और जो तुम्हें अच्छे भी लगें। अब जैसे चित्र तुम ख़ुद भी बना सकते हो या जैसी कहानियाँ, कविताएँ तुम ख़ुद भी लिख सकते हो और वह भी बिना किसी मेहनत के या बिना सोचे-समझे, वे तुम्हें भला क्यों अच्छे लगेंगे?

इसीलिए, हमारी कोशिश होती है कि हर बार हम लोग ऐसे ही चित्र, कहानियाँ और कविताएँ छापें जैसे तुम लोगों ने पहले देखे-पढ़े न हों। तो सीधी-सी बात यह कि हम ऐसी रचनाएँ नहीं छापते जो दूसरों जैसी हों। लेकिन, इससे तुम्हें निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि तुममें से हर एक बच्चे में कुछ न कुछ ऐसा ज़रूर है जो बाक़ी किसी में भी नहीं है। और जब वह हमें मिल जाता है तो हम उसे ज़रूर छापते हैं, इससे हमें बहुत खुशी होती है।

तुम्हें लगेगा, क्या मुसीबत है! अब यह कैसे ढूँढा जाए कि हममें ऐसी क्या बात है जो किसी और में नहीं? चलो, हम तुम्हें एक तरीक़ा बताते हैं।

किसी छुट्टी वाले दिन तुम आठ-दस दोस्त इकट्ठे होओ। और, कोई एक जगह तय करो, जैसे बाज़ार। आसपास कोई मेला या सर्कस चल रहा हो तो और भी अच्छा। अब अपने घर में ख़बर देकर सारे दोस्त वहाँ जा पहुँचो। वहाँ जोड़ियाँ बनाकर अलग-अलग घूमने निकल जाओ। हाँ, लौटने के लिए समय और जगह तय करना मत भूलना। घूमते समय बिना किसी की चिन्ता किए ज़्यादा से ज़्यादा देखने की कोशिश करो। फिर सब अपनी तय की हुई जगह पर मिलो और साथ-साथ लौटकर अपने-अपने घर जाओ। घर पहुँचकर अपनी कापी और पेन निकालो और अपनी सैर के बारे में जो-जो याद आता है उसे लिख लो।

अगले दिन फिर सारे दोस्त एक जगह इकट्ठे होओ और हर-एक अपना लिखा हुआ सबको पढ़कर सुनाओ। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि तुममें से हर एक की सैर की कहानी अलग-अलग होगी। तुम चाहो तो अपनी देखी हुई चीज़ या जगह का चित्र भी बना सकते हो। विश्वास करो, लाख चाह कर भी तुम लोग एक जैसे चित्र नहीं बना पाओगे। ये चित्र या सैर की कहानियाँ हमें भेज दो। हो सकता है, हम उन्हें छापने पर मजबूर हो जाएँ।

इसके अलावा तुमने मिस्त्री, बढ़ई, कुम्हार या जुलाहे आदि को काम करते देखा होगा। इनके बारे में भी कहानी, कविता लिख सकते हो या चित्र बना सकते हो। लेकिन हमारे अपने अनुभव ही सब कुछ नहीं होते। कई बार हमारी कल्पनाएँ अनुभवों से ज्यादा मज़ेदार होती हैं। जैसे पंचतंत्र की कहानियाँ, आश्चर्य लोक में एलिस, नन्हा राजकुमार या स्वामी की कहानियाँ और तुममें से बहुत सारे बच्चों के चित्र, जिनमें गधे की गर्दन जिराफ़ से भी ज़्यादा लम्बी होती है और हाथी की सूंड उसकी पूँछ से भी छोटी। टमाटर का पेड़ होता है तो छोटे से पौधे की टहनी पर बड़ा-सा मोर बैठा है। हालाँकि तुम थोड़ा-सा ध्यान दो तो देखोगे कि हमारी कोई भी कल्पना ऐसी नहीं होती जो असलियत से, जीवन से या प्रकृति से पूरी तरह से अलग हो। हाँ चीज़ों का क्रम या व्यवस्था ज़रूर इधर-उधर हो सकते हैं। मतलब यह कि तुम्हारी कल्पना चाहे जितनी ऊँची उड़े, वह एकदम बेपर की न हो।



● मनीष कुमार कन्नौजिया, नौवीं, बलिया, उ. प्र.

अब कुछ बातें रचनाओं के विषय के बारे में। 'चकमक' में आने वाली कविताओं में सबसे ज़्यादा का विषय होता है देश। इन कविताओं में 'जान लड़ा देंगे', 'छक्के छुड़ा देंगे,' 'आँधी से लड़ जाएँगे,' 'तूफ़ाँ से टकराएँगे,' 'फाँसी भी चढ़ जाएँगे' और भी पता नहीं क्या-क्या करेंगे जैसी बातें भरी होती हैं। लेकिन इसमें गड़बड़ तुम्हारी नहीं उन किताबों की है जो तुम्हें पढ़ाई जाती हैं।

यहाँ 'चकमक' के दफ़्तर में काम करने वाले हम सब भी देशभक्त हैं और अपने देश को बहुत प्यार करते हैं। लेकिन, तुम्हारी ऐसी कविताएँ देखकर हमें दुख होता है। बेशक, देश के लिए तुम्हारे मन में जो भावनाएँ हैं वे बहुत अच्छी हैं लेकिन देश को लेकर तुम लोगों की जो सोच-समझ है, वह शायद बहुत साफ़ नहीं है। देश केवल सीमाओं पर ही नहीं होता; हम, हमारा गाँव, हमारे जंगल, ज़मीन, नदी, पहाड़, गीत-संगीत, कलाएँ, विज्ञान........... यह सभी देश है। इन सबके बारे में सोचना, महसूस करना और लिखना, हमारे ख़्याल में ज्यादा गहरी देश भक्ति है, बनिस्बत इसके कि हम किसी अनदेखे-अनजाने दुश्मन के साथ युद्ध करते-करते कटने-मरने का सपना देखते रहें।

समझदारी की बात तो यह है कि युद्ध कभी हों ही नहीं, क्योंकि युद्ध केवल हारने वाले देशों के लिए ही नहीं जीतने वाले देशों के लिए भी बरबादी का कारण होते हैं। चकमक के अगस्त 95 के अंक में हमने ज़लाता की डायरी के कुछ अंश छापे थे। ये अंश यह बताने के लिए काफ़ी हैं कि युद्ध दरअसल कितना डरावना शब्द है बावजूद इसके कि यह डायरी युद्ध से होने वाली बरबादी का एक बहुत छोटा हिस्सा ही पेश करती है।

बात कुछ ज़्यादा ही गम्भीर हो गई। लेकिन इसे समझना बच्चों के लिए बड़ों से कहीं ज़्यादा ज़रूरी है। चकमक में और दूसरी किताबों में भी तुम दुनिया भर के बच्चों के बारे में पढ़ते रहते हो। क्या तुम्हें कभी ऐसा लगा कि तुम और वे अलग-अलग हैं? क्या बड़े होकर तुम उनसे युद्ध करना चाहोगे?

छोड़ो लड़ाई-लड़ाई माफ़ करो। अपने मन को साफ़ करो।

कहानियों की बात करें। तुम्हारी भेजी हुई कहानियों में से ज़्यादातर बेहद शिक्षाप्रद होती हैं। अन्त में यह भी लिखा होता है कि इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि ..... वग़ैरह-वग़ैरह। इनमें से कुछ कहानियाँ हम छापते भी हैं लेकिन बिना यह बताए कि उससे क्या शिक्षा मिलती है। जानते हो, क्यों? क्योंकि जीवन की हर घटना से; तुम्हारी या हमारी-अपनी हर कहानी से हमें और हर पढ़ने वाले को कुछ न कुछ शिक्षा मिलती ही रहती है। और सच बताओ, क्या तुम कहानी या कविता 'शिक्षा पाने' के लिए पढ़ते हो? जहाँ तक हम समझते हैं तुम ऐसी ही कहानी पढ़ना पसन्द करते हो जो मज़ेदार हो। यह तो बात ही नहीं हुई कि पढ़ने के लिए तो ज़्यादा से ज़्यादा मज़ेदार कहानी ढूँढी जाए और लिखने के लिए यानी, दूसरों को पढ़वाने के लिए भारी भरकम शिक्षा ढूँढी जाए। मराठी में 'सज़ा' को शिक्षा कहते हैं और उस शिक्षा से बड़ी सज़ा क्या हो सकती है, जो सिर्फ़ दूसरों के लिए हो।

चलो, छोड़ो। इस चिट्ठी से वैसे भी तुम्हें अब तक काफी-सारी 'शिक्षाएँ' मिल चुकी हैं। फिर मिलेंगे। बहुत जल्दी।

तुम्हारी दीदी।

कविता



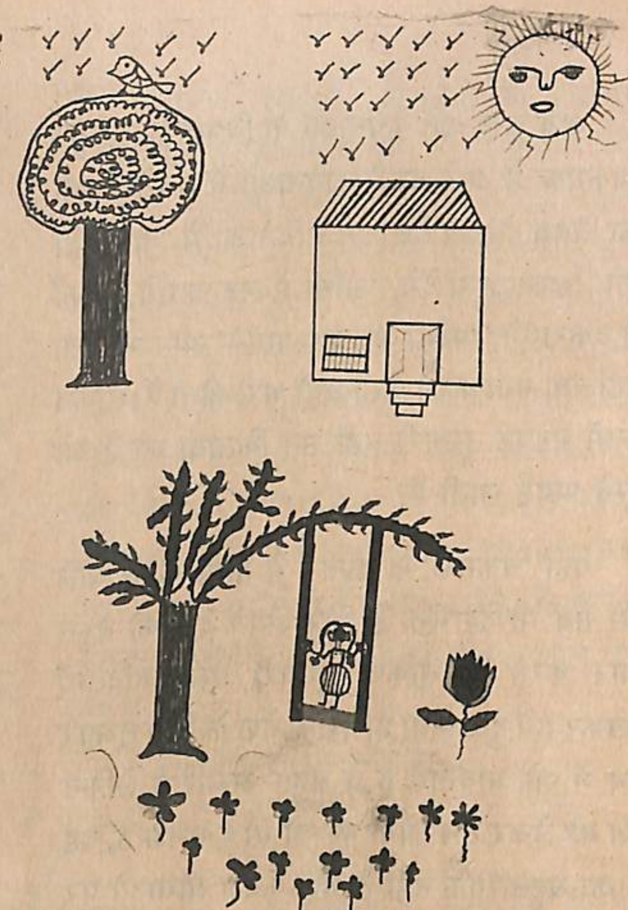
सपना

कल मैंने देखा एक सपना
जिसमें ये जहाँ था बस अपना
छोटा-सा था गाँव हमारा
जो था हमको सबसे प्यारा

सूरज की पहली किरण
पड़ती मेरे घर आँगन में
दूर गगन में उड़ते पक्षी
हर मौसम, हर सावन में
कल-कल नदी बहती जाए
जो जीवन का राग सुनाए

सुन्दर-सुन्दर वृक्ष हमारे
इन पर हमने झूले डाले
झूलों पर हम गाना गाते
बस एक बात फिर दोहराते
छोटा-सा था गाँव हमारा
जो था हमको सबसे प्यारा

● ओम प्रकाश सोनी, नौवीं, करेली, नरसिंहपुर, म.प्र.



● सुनील गुप्ता, तीसरी, सिरसी, मनावर, धार, म.प्र.

सपनों का घर

सपनों का छोटा-सा घर
कितना प्यारा कितना सुन्दर
सपनों का छोटा-सा घर
मेरे सपनों के घर को
लगे किसी की न नज़र
मेरे सपनों के घर का आँगन
फूलों से है महक रहा
भौंरे झूल रहे फूलों पर
उड़-उड़कर यहाँ-वहाँ पर
थोड़ी दूर पर है एक तालाब
जिसमें रहते ख़ूब मगर
कितना प्यारा कितना सुन्दर
सपनों का छोटा-सा घर

● महावीर अग्रवाल, छठवीं, कोरबा, म.प्र.



● मनु पाण्डे, पाँचवीं, जाखनदेवी, अल्मोड़ा, उ.प्र.



मेरा सपना

एक दिन मैं सो रहा था
सपनों में मैं खो रहा था

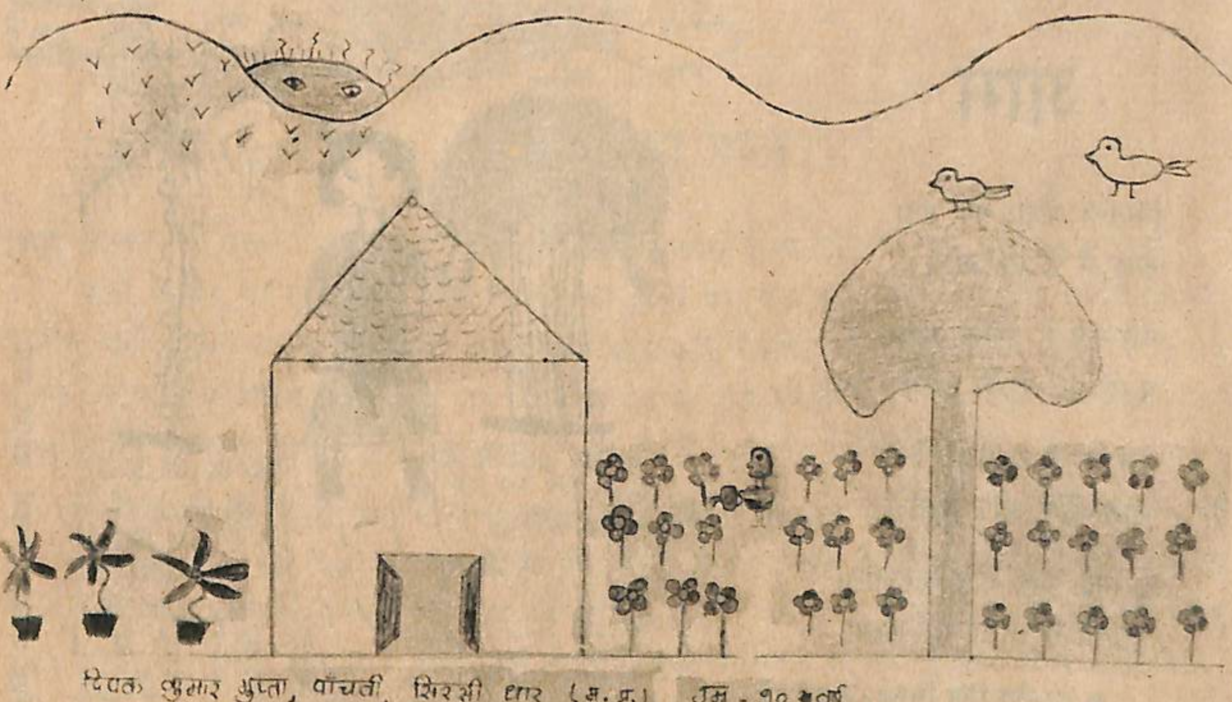
चुपके से एक चिड़िया आई
मेरे कान में चूँ चूँ गाई

जल्दी से मैं जग गया था
डर के मारे फिर सो गया था

जब सुबह होने लगी
चिड़िया आवाज़ करने लगी

जब मैं उठने लगा
सूरज भी उगने लगा

● चंपुना मानपोंग, सातवीं, खारसाँग, अरूणाचल प्रदेश



● दीपक गुप्ता, सिरसी, मनावर, धार, म.प्र.



पैसे भी गए मार भी पड़ी

एक बार एक गाँव से बीस आदमी बाज़ार करने गए। बाज़ार करके वापस आए तो बोले कि हम कम तो नहीं हो गए, गिन लो। सब लाइन में खड़े हो गए और गिनने लगे। गिनते समय वह जो गिनता था खुद को नहीं गिनता था। इसीलिए सब परेशान थे।

वहाँ एक पुलिस की गाड़ी आई और इतने आदमी देखकर रुक गई। गाड़ी में से एक पुलिस वाला उतरा। उन लोगों से पूछने लगा, "क्यों भाई क्या बात है? आप लोग बहुत परेशान दिखाई दे रहे हैं।" उन्होंने कहा, "साहब हम घर से बाज़ार बीस आदमी चले थे।"

"तो क्या हुआ?"

"उसमें से एक कम हो गया है।"

पुलिस वाले ने मन ही मन सबको गिन लिया और कहा, "अगर आपको पूरे बीस कर दें तो?"

"हम आपको बीस-बीस रुपए देंगे।"

"ठीक है।" पुलिस वाले ने सबको एक लाइन में खड़ा कर दिया और कहा, "जिसको हम गिन लें वह डबल से नहीं आएगा।"

एक को एक हाथ मारा और बोला "एक" इस प्रकार सभी की पिटाई हुई और सबने पुलिस वाले को बीस-बीस रुपए भी दिए।

सब दुखी थे और कह रहे थे, "बीस-बीस रुपए भी गए और मार भी खानी पड़ी।"

● कैलाश कुमार हरियाले, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

आम

कितना ऊँचा पेड़ बड़ा
खेत में है यह खड़ा

बड़े-बड़े हैं इसके आम
फलों का राजा इसका नाम

रंग के हैं ये पीले-पीले
मीठे-मीठे और रसीले

इसका फूल बौर कहलाता
इसको है तोता भी खाता

● गुरमीत सिंह सिक्ख, बारह वर्ष,
गढ़ी बारोद, शिवपुरी, म.प्र.



● नीता अग्रवाल, सातवीं, खारदा, म.प्र.



सुनीता गौर, छठवीं, हिरणखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

सोचती हूँ मैं

चाँद का चमकना
आग का दहकना
फूल का महकना
मौसम का आना
बादलों का छाना
सोचती हूँ मैं कभी,
कहाँ से आए ये सभी
किसने बनाया इसे
किसने सजाया इसे
ये प्रकृति की देन हैं।
जो हम पे मेहरबान है।
आओ इसे सम्भालें हम
इससे ही दुनिया आबाद है।

● पूजा दुबे, बारहवीं, सेमरी खुर्द, होशंगाबाद,म. प्र.

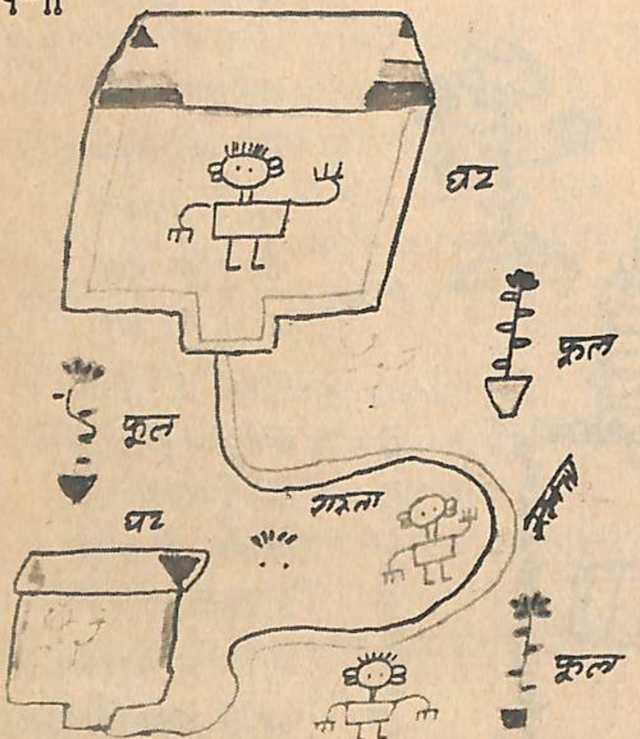
लालच का फल

एक लड़का था। उसका नाम रमेश था। एक दिन वह पास के बगीचे में गया। वहाँ तरह-तरह के फलों के पेड़ थे। रमेश एक आम के पेड़ की डाली पर चढ़ गया। वह आम तोड़ने लगा। तभी मालिक वहाँ आया। उसने इधर-उधर देखा, उसे कुछ नहीं दिखाई दिया। वह सेब के पेड़ पर से सेब तोड़कर टोकरी में डालने लगा। फिर वह आम के पेड़ के पास गया। उसने देखा कि एक लड़का आम तोड़-तोड़कर खा रहा है। वह उसे डंडे से मारने लगा।

एक दिन वह फिर उसी बगीचे में गया। वह एक सेब के पेड़ पर चढ़ गया। वह सेब तोड़ते-तोड़ते एक पतली सी डाली पर चढ़ गया। अभी उसने एक-दो ही फल तोड़े थे कि अचानक वह गिर पड़ा। फिर उसकी माँ आईं। उन्होंने बेटे से कहा, कि तुम कल इसी बगीचे से आम तोड़कर लाए थे। और तुमने मुझसे झूठ बोला था कि मैं यह आम पिता से रुपए माँगकर बाज़ार से ख़रीदकर लाया था।

● सत्यप्रियदर्शिनी निगम, तीसरी, नियोसा, अरुणाचल प्रदेश

पक्की सड़क



● कमलेश मालाकार, भादूगाँव, टिमरनी, म.प्र.

मेरे घर के आसपास बहुत से घर हैं।

बरसात का मौसम आने वाला है और मोहल्ले में कच्ची सड़क है। ऐसे में अगर पानी गिर जाए तो कीचड़ हो जाता है। तकलीफ़ होती है।

मोहल्ले के कुछ बड़े लड़कों ने मिलकर इस बार बरसात आने से पहले सड़क बनाने का निर्णय किया। एक लड़के ने पूछा कि इसके लिए क्या करना होगा? दूसरे लड़के ने कहा, "पहले सभी घरों में जाकर चंदा इकट्ठा करना होगा।" सभी इस बात से सहमत हो गए। सड़क के नाम से सभी ने चंदा भी दे दिया। कुल नौ सौ रुपए ही हुए होंगे।

इतने पैसे में तो रेत, मुरम और मिट्टी ही आ सकती है, मज़दूर नहीं आएँगे। सभी को मिलकर श्रमदान करना होगा।

कुछ दिनों बाद रेत और मुरम भी आ गई। पर सड़क कैसे बनाएँ। सड़क बनाने के लिए तो सभी को आना ही पड़ेगा।

घर-घर जाकर सभी को बुलाया गया। वे मान गए। तसलों में उठाकर रेत, मुरम और मिट्टी कच्ची सड़क पर बिछाते गए। काम दो, तीन दिन तक चला क्योंकि एक दिन में ज़्यादा काम नहीं हो पाता था। सड़क भी बन गई। वो हमारे मोहल्ले की पक्की सड़क थी।

● राहुल बाविसटाले, नौवीं, बिलासपुर, म.प्र.

थोड़ी सी बात में नाराज़

मैं और मेरे दोस्त स्कूल में बैठे थे और हम दोनों बातें कर रहे थे तो एक दोस्त आया और बोला कि आप लोग यहाँ कैसे बैठे हैं तो मैं बोला कि हम दोनों पैरों को ज़मीन में रखे हैं और बैठे हैं।

वह दोस्त बोला कि यार तुम तो बोर कर रहे हो। तो मेरा दूसरा दोस्त हँस दिया। उस दिन से वह दोस्त हम दोनों को बातें करते देख लेता तो हम लोगों के पास नहीं आता। और उस दिन से ठीक से बात भी नहीं करता।

● अमृतलाल खुटे, बिर्रा, बिलासपुर, म.प्र.



अंकल-अंटी

अंकल मेरे घर आए थे
ख़ूब खिलौने साथ लाए थे
साथ में अंटी आईं थीं
ख़ूब मिठाई लाईं थीं
घर में खुशियाँ आईं थीं
ख़ूब खिलौने खेले मैंने
ख़ूब मिठाई खाई थी
लेकिन दुनिया ख़ूब निराली है
दिल्ली बम्बई आली है
रेलगाड़ी आती है
धुआँ छोड़ती जाती है
अंकल भी आते हैं
खिलौने देकर जाते हैं
अंटी भी आती हैं
मिठाई देकर जाती हैं
खुशियाँ भी चली जाती हैं
घर सूना सूना लगने लगता है।

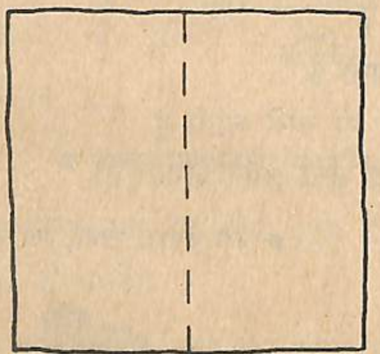
● बंटी कुमार, नौवीं, इटारसी, म.प्र.



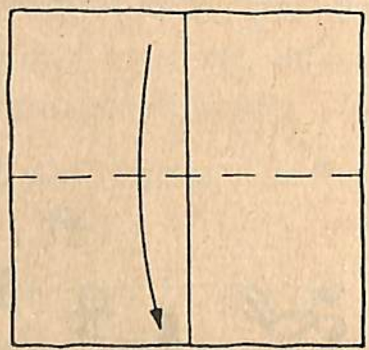
● मृत्युन्जय नागर, खौरीया एमा, शाजापुर, म.प्र.

मुकुटनुमा टोपी

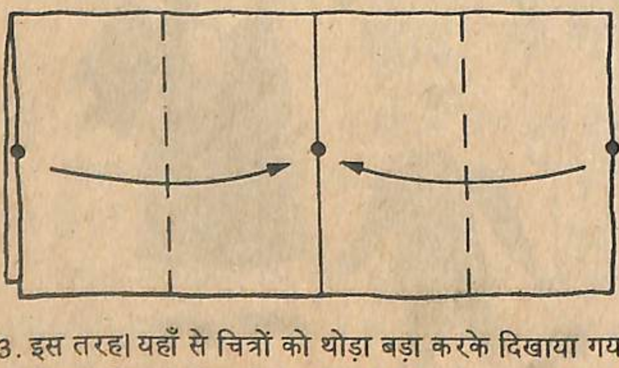




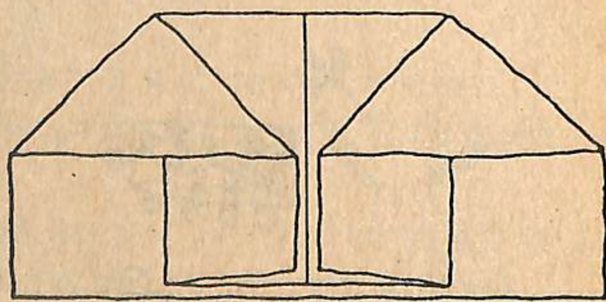
1. एक वर्गाकार काग़ज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से मोड़ बनाओ। मोड़ पक्का करके वापस खोल लो।



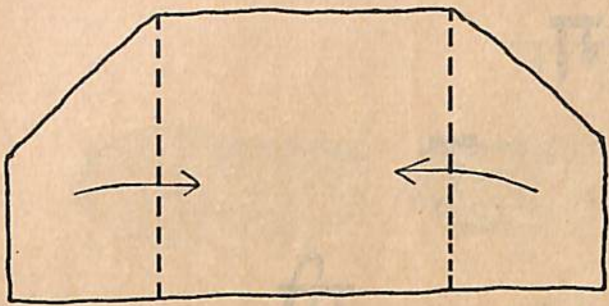
2. अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।



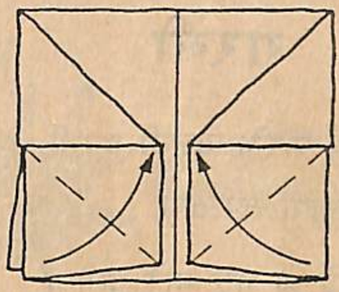
3. इस तरह। यहाँ से चित्रों को थोड़ा बड़ा करके दिखाया गया है। इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाना हैं। केवल ऊपरी सतह को ही मोड़ना।



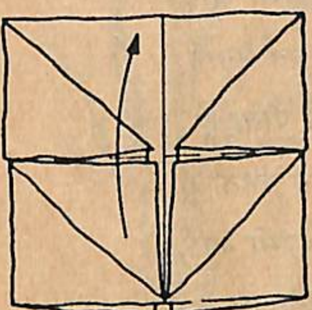
4. देखो इस तरह की आकृति बनेगी। अब इस आकृति को पलट लो।



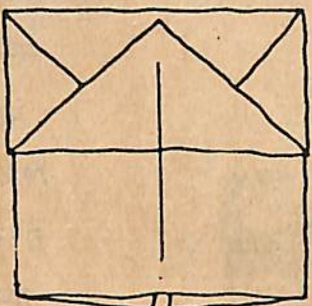
5. इस चित्र में दिखाई गई टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशाओं में मोड़ बनाओ।



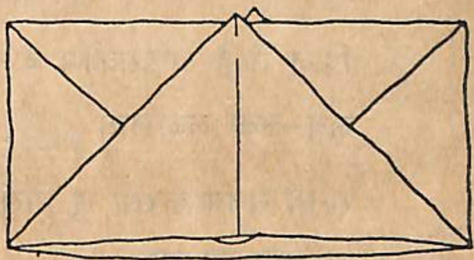
6. इस तरह की आकृति बनेगी। अब इस आकृति में नीचे की ओर दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ। सिर्फ़ ऊपर की दोहरी सतहों को ही मोड़ना।



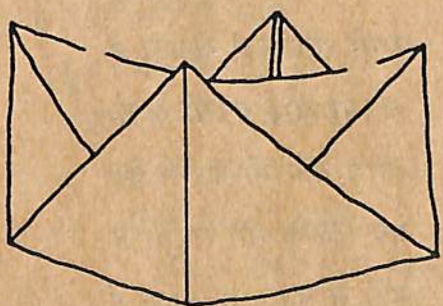
7. इस तरह अब नीचे की ऊपरी सतह को तीर की दिशा में मोड़ लो।



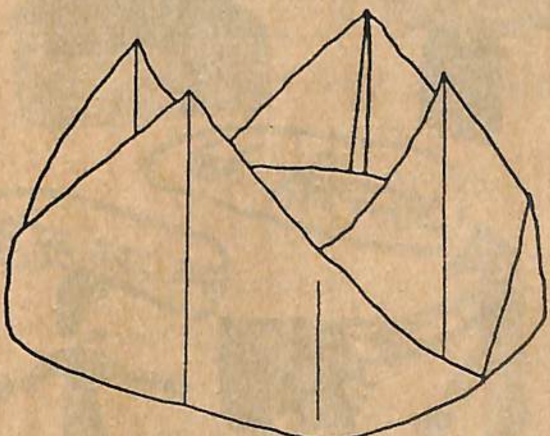
8. इस तरह। अब इस आकृति को पलट लो। और चित्र-6 और चित्र-7 की क्रियाएँ दोहराओ।



9. उसके बाद तुम्हें ऐसी आकृति मिलेगी। इसके नीचे के खुले सिरों को पकड़कर चौड़ा करो।



10. दो उठे हुए तिकोन तो तुम्हें आसानी से दिख जाएँगे। और दो तिकोन निकालने के लिए बीच के उठे हिस्से को नीचे की ओर धीरे-से थोड़ा दबाओ।



11. इस तरह की टोपी बनेगी। मुकुट जैसी यह टोपी तुम अपने सिर के नाप की बनाना चाहो तो किसी अख़बार का एक पन्ना लेकर उससे बनाओ।

मेरा पन्ना

गरमी

धूँ-धूँ करके जलती धरती
तप-तपा तप-तपा
कपड़े हो गए मारे पसीना
चप-चपा चप-चपा
कैरी करौंदे जामुन फ़ौरन
खप-खपा खप-खपा
शरबत गन्ना रस ठंडाई
गप-गपा गप-गपा
फ्रिज में है आइसक्रीम बर्फ़
लब-लबा लब-लबा
सनन सनन करती लू बोले
हप-हपा हप-हपा

● जितेन्द्र कुमार सैनी, होशंगाबाद, म.प्र.

ग र मी आई

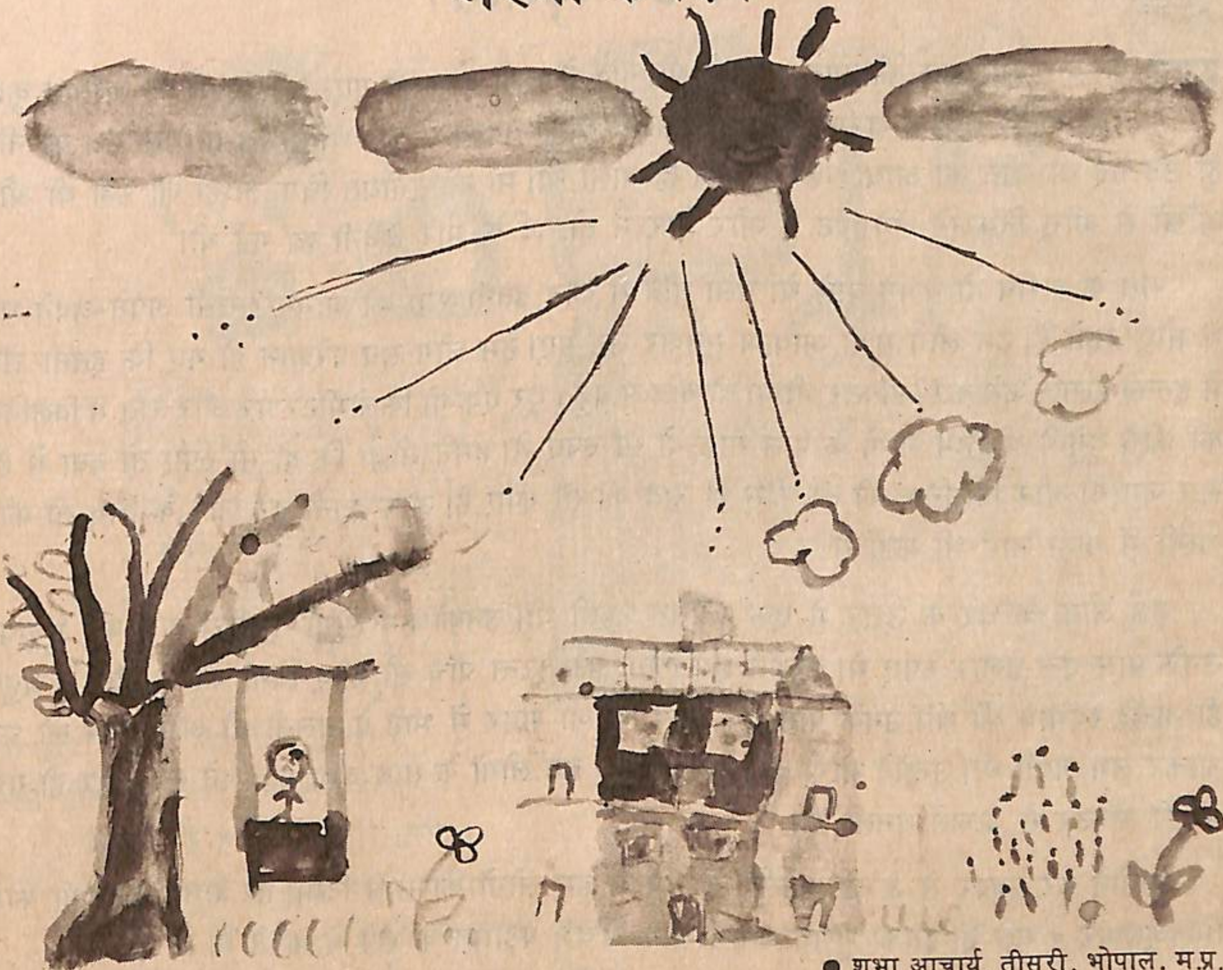
गरमी आई गरमी आई
मम्मी ने शरबत बनाई
बार-बार मैं पीता हूँ
फिर भी प्यासा रहता हूँ
गरमी आई गरमी आई
सुबह देर से उठता हूँ
छुट्टियाँ ख़ूब मनाता हूँ
स्कूल नहीं मैं जाता हूँ
गरमी आई गरमी आई
रोटी सब्ज़ी नहीं खाता हूँ
आम-तरबूज खाता हूँ
बाहर कहीं नहीं जाता हूँ
मम्मी संग लूडो खेलता हूँ
गरमी आई गरमी आई
होम वर्क भी करना है
अब किसके संग लड़ना है
यही सोचकर घबराता हूँ
गरमी आई गरमी आई

● चिन्मय मुखी, चौथी, राजकोट, गुजरात



● विजय किशन, चौथी, जगदलपुर, म.प्र.

गरमी के दिन



● शुभा आचार्य, तीसरी, भोपाल, म.प्र.

गरमी के दिन आए पुराने
लगने लगे सुहाने।
विद्यालय की हुई छुट्टियाँ
खुशियाँ मन में भाए।
कूलर पंखे चलते दिन भर
रात को नींद न आए।
छत पर सोकर ऊपर देखो
मस्त चाँदनी भाए।
गाँव में देखो लोग मस्ती से
बाहर खटिया बिछाए।
लम्बी-लम्बी रातों में ये लोग
गुलछर्रे उड़ाएँ।

गरमी यूँ तो सुखदायक
दुख भी इसके भारी हैं।
बाहर निकलो तो गरम हवाएँ
लगती है महामारी।
गर्मी में दिन कटता नहीं
खेल ही खेल दिखता है।
कोई कॉमिक्स की दुकान लगाते
माल बहुत ही बिकता है।
गरमी से जब हो ईर्ष्या
होने लगती है वर्षा।
तब किसानों के हृदय में
होने लगती है हर्षा।

● मंजुलता शर्मा, आठवीं, लसुड़ली, राजगढ़, म.प्र.



अच्छी पड़ोसन

ठण्ड के दिन थे। कड़ाके की ठण्ड पड़ रही थी। गाँव में सभी लोग सो गए थे। मेरी माँ की तबीयत कुछ रात बीतने के बाद ख़राब होने लगी। सभी घर के सदस्य सो रहे थे। माँ की तो बस रात की नींद ही उड़ गई थी। रात का आधा पहर गुज़रने ही वाला था। माँ की तबीयत बिगड़ती ही जा रही थी और आँखों से आँसू निकलने लगे। पेट में और सिर में तो दर्द के मारे बेचैनी छा गई थी।

रात के क़रीब दो बजने वाले थे। भला गाँव में कौन इतनी रात को जागेगा? सभी अपने-अपने घर में सोए रहते हैं। हम लोग सभी आवाज़ सुनकर उठ गए। हम लोग सब परेशान हो गए कि इतनी रात में इनका इलाज कैसे करें? डॉक्टर भी था तो गाँव से बहुत दूर एक-दो किलोमीटर पर और रात में क्लिनिक की फ़ीस दुगुनी थी। हम लोगों के पास मात्र दो सौ रुपए थे। हमने सोचा कि दो सौ रुपए तो दवा में ही लग जाएँगे। और क्लिनिक की तो फ़ीस ही रात की सौ रुपए है। और इतनी दूर जाने के लिए तो कोई जल्दी में गाड़ी लाएँ भी कहाँ से?

हम लोगों के घर के उत्तर में एक पड़ोसन रहती थीं। उनको हम लोगों ने सारा हाल कह सुनाया। उनके पास एक हज़ार रुपए थे। उन्होंने हम लोगों को तुरन्त पाँच सौ रुपए बिना कहे दे दिए। वे बहुत ही अच्छे स्वभाव की थीं। उनके पास एक जीप थी जो शहर में भाड़े पे चलती थी और शाम को घर आकर लग जाती थी। उन्होंने सारी बात समझते हुए हम लोगों के साथ जीप से चलने को तैयार हो गईं। उनकी डॉक्टर से अच्छी बनती थी।

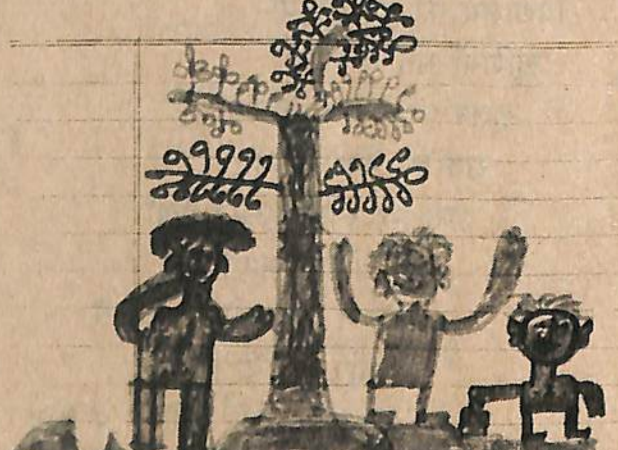
उन्होंने हर प्रकार से अच्छे पड़ोसी के रूप में हम लोगों का साथ दिया। हर समय कोई भी काम मिलजुलकर करती हैं। इनका गुणगान हम लोग अच्छी पड़ोसन के रूप में करते हैं।

● अली असगर खान, बारह वर्ष, पलामु, बिहार

मेरा दोस्त

मेरा एक दोस्त था। उसका नाम था शुभम! एक दिन हम लोग शतरंज खेल रहे थे। खेल ही खेल में हम लोगों की लड़ाई हो गई तो हम लोग ने एक साथ खेलना बन्द कर दिया। तो मैंने दूसरा दोस्त बना लिया। उसका नाम नेहाल था। वह मेरे पुराने दोस्त का पक्का दोस्त था। फिर उसने हम दोनों कि दोस्ती करवा दी। फिर हम तीनों दोस्त बन गए।

● रितेश राय, जबलपुर, म.प्र.



● सुन्दर लाल, मल्हारगढ़, मन्दसौर, म.प्र.

ज़िन्दगी गाँव की





● आदित्य तिवारी, चौथी, धार, म.प्र.

ज़िन्दगी गाँव में करती है बसर।
मिले मौका तो करो इनका सफ़र॥
दिखती है हर तरफ हरियाली।
मानो लगती है छाई हरी जाली॥
देखो इसे दूर से तो लगता है जंगल।
घुसो तो दिखता है हर तरफ मंगल॥
गाँव में हर कोई दिखता है मज़बूत शरीर वाला।
लगता है सभी को एक साँचे में है ढाला॥
हैं ये किसान नहीं करते कभी आराम।
आराम को ये सब समझते हैं हराम॥
शहर से दूर नहीं कोई चहल-पहल।
टूटी फूटी झोपड़ी है, नहीं कोई महल॥
क्या गर्मी क्या सर्दी क्या बरसात।
करते काम सभी एक साथ॥
गाँव में ही जीते गाँव में ही मरते।
हर दुख-दर्द को हैं सहते॥
करते सभी से ये प्यार।
मौका मिल तो देखो इनको एक बार॥

● ग़रीबदास मानिकपुरी, धोबनी, रायपुर, म.प्र.

गरमी की छुट्टियाँ



● पूर्वा वशिष्ठ, सात वर्ष, भोपाल, म.प्र.

छुट्टियों में बोरियत दूर करने के लिए कुछ नई वस्तु चाहिए। दोपहर के लिए तो बहुत ही ज़रूरी। क्योंकि दोपहर में ना तो खेल सकते हैं और नींद से तो नफ़रत है। ऐसे में यदि कोई किताब पढ़ने को मिल जाए तो मज़ा आ जाए। एक दिन मेरे पास पढ़ने के लिए कोई नई किताब नहीं थी। मैंने सोचा कि थोड़ा खेल लूँ क्योंकि दोपहर तो बितानी ही थी पर कोई मज़ा नहीं आया। मैं फिर बैठ गई। मैंने पुरानी किताबें पढ़ीं पर कब तक उन्हें पढ़ती क्योंकि मैं उन्हें कितनी ही बार पढ़ चुकी थी। तभी मम्मी उठी। उन्होंने मुझे उदास देखकर कारण पूछा तो मैंने कहा कि बोर हो रही हूँ। मम्मी ने कहा कि सो जाओ और यह कह कर ख़ुद सो गई। मैंने सोचा चलो सोकर देखते हैं पर आँखों में नींद कहाँ थीं? मैं मन-मारकर बैठ गई और सोचने लगी कि बड़ों को नींद कैसे आती है। मैंने टेलीविज़न चलाकर देखा पर उसमें भी कृषि सम्बंधित कार्यक्रम देखकर उसे भी बन्द कर दिया। फिर घंटी बजी! मैं दौड़कर गई दरवाज़ा खोला तो मेरी सहेली थी। हम थोड़ी देर खेले फिर बातचीत करने लगे। मैंने उससे पूछा कि तू तेरी बोरियत कैसे दूर करती है। उसने टका सा जवाब दिया मैं खेलती रहती हूँ और कुछ न कुछ खाती रहती हूँ। मैं उसका चेहरा देखती रह गई और कहा तभी तो तू मोटी हो गई है। थोड़ी देर गपशप करने के बाद वो चली गई और फिर बोरियत ने मेरा दामन पकड़ लिया।

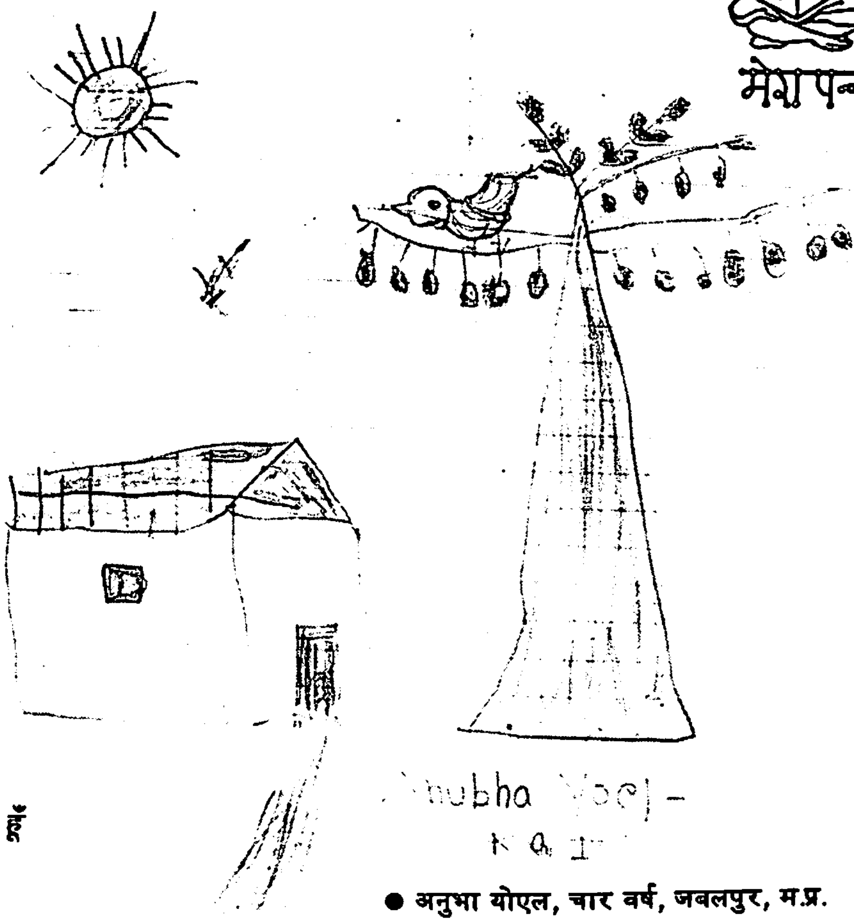
अगली बार घंटी बजी। मैं बुझे मन से दरवाज़ा खोलने गई। खोलने पर देखा तो नई चकमक पड़ी थी। मुझमें एक नई ताज़गी आ गई। मेरा मन बल्लियों उछलने लगा। ऐसा लगा जैसे मैं नाचूँ। धूप थी इसलिए मैं पत्रिका को चूमते हुए कमरे में ले गई और पैर पर पैर रखते हुए उसे पढ़ने लगी और एक घण्टे में मैं उसे चाट गई। मतलब मैं उस पत्रिका को पूरी पढ़ गई।

शाम भी बीत गई। रात को भोजन के बाद में बिस्तर पर लेटे हुए कल की बोरियत दूर करने के लिए उपाय सोचने लगी।

● देवयानी अग्रवाल, सातवीं, उदयपुर, राजस्थान



चिड़िया



● अनुभा योएल, चार वर्ष, जबलपुर, म.प्र.

एक छोटी चिड़िया
खूब नहाती है

मेरे घर के समीप
एक मन्दिर है
सूर्योदय के पहिले
मन्दिर का घंटा बजता है
और मैं उठ जाता हूँ
मेरे पास अलार्म घड़ी नहीं है।

मेरे पड़ोसी का झबरा कुत्ता
सुबह सुबह खूब दौड़ता है
मैं भी खूब तेज धावक बनना चाहता हूँ
एक अनजाना लक्ष्य पाना चाहता हूँ

बूढ़ी लावारिस गाय
रोज़ दोपहर के पहिले आ जाती है
मैं उसे एक रोटी देकर
स्कूल चला जाता हूँ

मेरे आँगन की हौज में
छोटी चिड़िया खूब नहाती है
खूब चहचहाती है
मैं भी जमकर नहाता हूँ
कुछ न कुछ गुनगुनाता हूँ

धीमी-धीमी हवा में
छोटे-छोटे पौधे खूब झूमते हैं
मैं भी उन्हीं की तरह
स्वच्छन्द होना चाहता हूँ।

● मुकेश बड़गैयाँ, पथरिया, दमोह, म.प्र.

सूरज की किरणें

सूरज की किरणें सतरंगी
दिन को निकले शाम को डूबे

इन किरणों से कोई न ऊबे
सूरज की किरणें सतरंगी

किरणों में प्यारे-प्यारे रंग
ये हैं सूरज के संग

कभी करें न हमको तंग
सूरज की किरणें सतरंगी

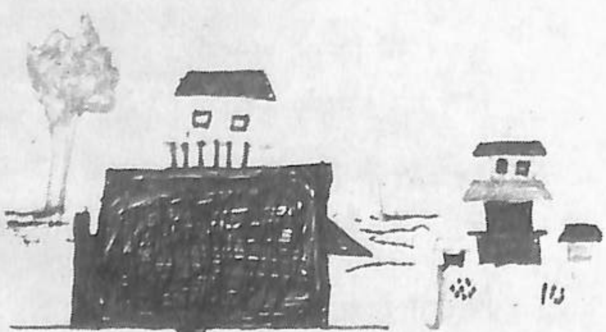
● पी. देवी, सातवीं, भिलाई, म. प्र.



● सपना पोरवाल, बालागुड़ा,मन्दसौर,म.प्र.



● कुणाल पुरे,इन्दौर, म.प्र.



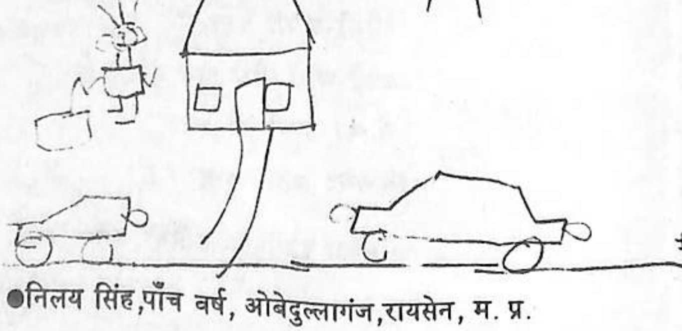
● रामविलास बिलारे, सातवीं,चौकड़ी, होशंगाबाद, म. प्र.



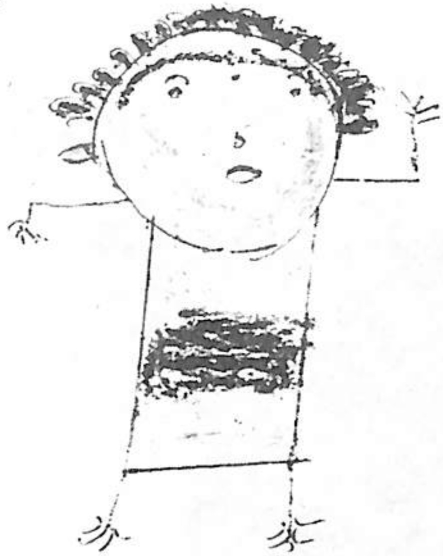
●प्रकाश थवाइत, छह वर्ष, रामपुर, बिलासपुर,



● मुरारी लाल विकलांग,पाँचवीं, वनकूकरा, भरत
राजस्था

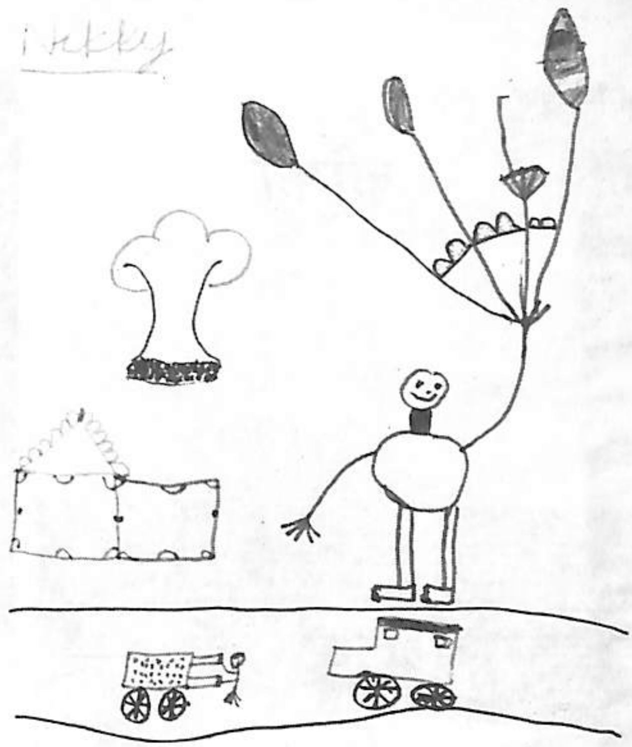


●निलय सिंह,पाँच वर्ष, ओबेदुल्लागंज,रायसेन, म. प्र.

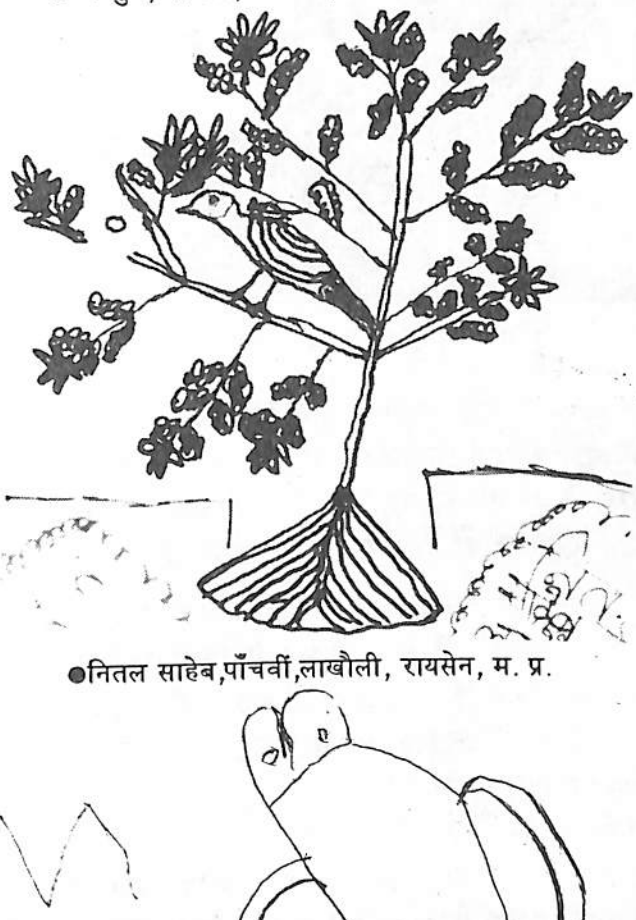


ा. प्र.

● अन्जुम, पाँचवीं, सतवास, देवास म. प्र.



● अंशधा सिंह, छह वर्ष, भोपाल, म. प्र.

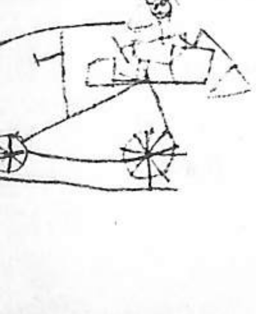


●नितल साहेब,पाँचवीं,लाखौली, रायसेन, म. प्र.

ुर,
न



●रमेश भिलाला, छठवीं, चौकड़ी, होशंगाबाद, म. प्र.



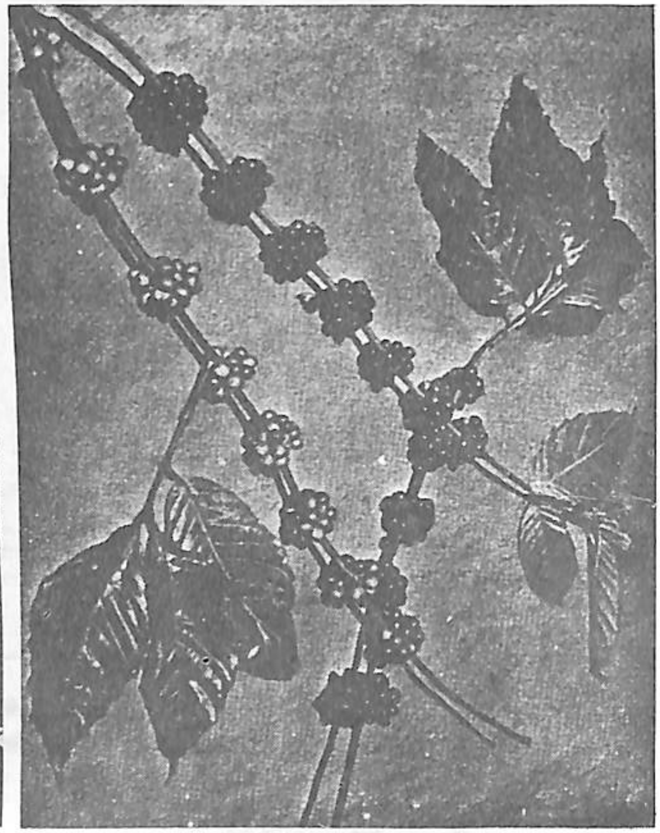


●बदरूद्दीन,परासिया, म. प्र.

कॉफ़ी



कॉफ़ी के फूल



कॉफ़ी के फलों से लदी एक डाली

कॉफ़ी! *हाँ वही पीने वाली कॉफ़ी। इसकी कई जातियाँ होती हैं। इनमें कुछ जातियों में छोटे पेड़ होते हैं तो कुछ में झाड़ियाँ और कुछ-कुछ में बड़े पेड़ भी होते हैं। मूल रूप से बेल्जियम का यह पौधा भारत में जावा होता हुआ पहुँचा। मुख्य रूप से दक्षिण भारत में इसे बड़ी मात्रा में लगाया जाता है। वहाँ इसे नारियल और केले के साथ-साथ लगाया जाता है।*

कॉफ़ी के अलग-अलग जाति के पेड़ में पत्ते, फल, फूल अलग-अलग तरह के होते हैं। यहाँ तुम जिसके चित्र देख रहे हो उसे कांगो कॉफ़ी या रोबुस्टा कॉफ़ी के नाम से जानते हैं। इस पेड़ की ऊँचाई लगभग पन्द्रह से तीस फीट तक होती है। इसमें गहरे हरे रंग के पत्ते होते हैं। इसके फूल सफ़ेद, तारे जैसे और सुगंधित होते हैं। और हल्के लाल रंग के छोटी-छोटी बेरियों जैसे फल लगते हैं। फलों में से छोटे-छोटे बीज निकलते हैं। इसकी लकड़ी भारी और कठोर होती है।

कॉफ़ी के पौधे के लिए गर्म और नम वातावरण ज़रूरी है। यह पौधा बीज से उगाया जाता है। आमतौर पर कॉफी के पौधे लगाने के लिए जंगल के कुछ हिस्से को साफ़ करते हैं फिर उस ज़मीन पर कॉफ़ी लगाते है। जंगल में बचे हुए बड़े पेड़ नए पौधों पर छाया करते रहें इसीलिए जंगल को आंशिक रूप से साफ़ किया जाता है।

कॉफ़ी जो पीने के काम में लाई जाती है वो इसके फलों के बीज होते हैं। बीज को फल से अलग करने का काम दो तरह से किया जाता है। एक सूखा तरीका, दूसरा गीला। सूखा तरीक़ा मुख्य रूप से कुटीर उद्योगों में और ख़ासकर ब्राज़ील, वेनेज़्युएला, कोलम्बिया जैसे देशों में प्रचलित है। इसमें फल को सुखाकर, कूटकर और छानकर बीज अलग कर लिए जाते हैं। गीला तरीक़ा वहाँ उपयोग में आता है जहाँ यह काम बड़ी मात्रा में किया जाता है। फल से बीज अलग करने के बाद बीज को भूनकर, उससे पाउडर बनाकर उसे इस्तेमाल किया जाता है।

इसके पत्ते भी कहीं-कहीं इसी तरह इस्तेमाल होते हैं। इसकी लकड़ी खोखे (डिब्बे) बनाने के काम आती है। बीज से कॉफी बनाने के बाद छिलका और गूदा, जो बाकी बचता है, उससे प्लास्टिक बनाया जाता है। ●●●

नानी आई



नानी आई नानी आई
साथ में कहानी लाई।
रात को वो हमें सुनाती है
जिससे हमें नींद आ जाती है।
कहानी में होते रानी राजा
जिनके साथ होते बैण्ड बाजा।
और होती जादू की परियाँ
जो लगती हमको बढ़िया।
करती नानी जब पूजा-पाठ
बैठ जाते हम भी उनके साथ।
नानी आई नानी आई
जो साथ में कहानी लाई।

● महेन्द्र श्रीमाली, आठवीं, फालना, पाली, राजस्थान

● मीरा गोस्वामी, हिरणखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

नानी ऐसा क्यों होता है



नानी ऐसा क्यों होता है
घड़ी टिक टिक क्यों करती है
दीदी स्कूल क्यों जाती है
मम्मी खाना क्यों बनाती है

नानी ऐसा क्यों होता है
पापा दफ़्तर क्यों जाते हैं
खाना हम सब क्यों खाते हैं
कपड़े हम सब क्यों पहनते हैं
हम सब स्कूल क्यों जाते हैं।
नानी ऐसा क्यों होता है।

● नीतू जैन, सातवीं, भिलाई, म.प्र.

● बृजेश द्विवेदी, चौथी

सावन

बरसात में आता है ये सावन
फूलों को महकाता है ये सावन
रिमझिम-रिमझिम बरसात
लाता है ये सावन
मनमोहक रंगों से सजा है सावन
दिलों को छू लेता है सावन
हर वर्ष आता है ये सावन
सबका मन मोह लेता है सावन

● रूपी कुरैशी, अर्जुन्दा, रायपुर, म.प्र.



● सुखमनी ग्रोवर, आठ वर्ष, अमृतसर, पंजाब



● किरण मिश्रा, सात वर्ष, नई दिल्ली

वर्षा ऋतु

झूम उठी है सारी दुनिया
नभ पे लालिमा छाई
चारों तरफ हरियाली ही हरियाली
कहीं पे नहीं है ज़मीन ख़ाली
वर्षा ऋतु आई, वर्षा ऋतु आई
दिन रात बादल में
छाई है बदली
नज़र नहीं आता अब सूरज भी
ऐसा लगता है मानो धरती की
आई फिर से नई जवानी
वर्षा ऋतु आई
वर्षा ऋतु आई

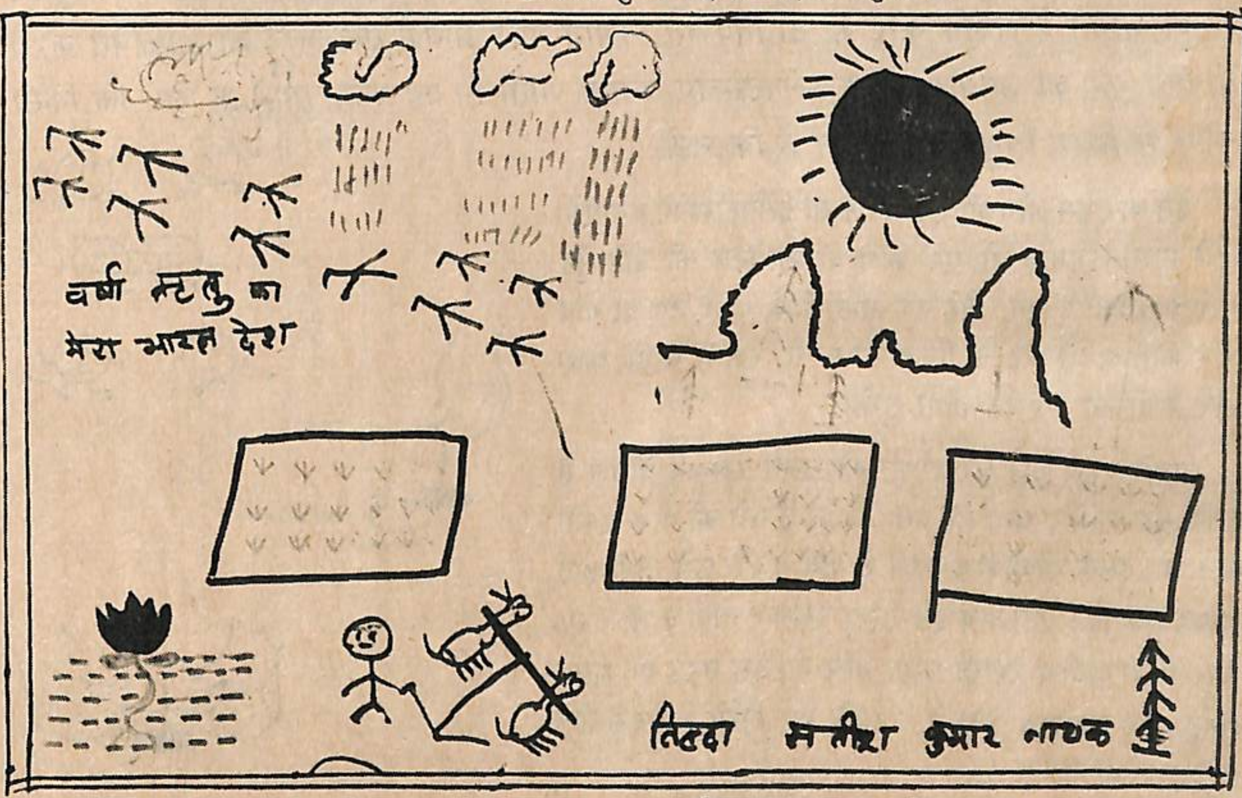
● दिलीप कुमार मिश्रा, दसवीं, सेमरसल,
बिलासपुर, म.प्र.



बरखा रानी

चिड़िया चूँ चूँ करती आई
बरखा रानी का सन्देश लाई
कहती है कल बरसूँगी मैं
पौधों खेतों पर जी भर बरसूँगी मैं
चिड़िया चूँ चूँ करती आई
बरखा रानी का सन्देश लाई
सारे मित्र खुश होंगे भाई

●अनिता कुम्भकार, सातवीं, शाजापुर, म.प्र.



● सतीश कुमार नायक, पाँचवीं, तिल्दा नेवरा, रायपुर, म.प्र.

बारिश के दिन

जब आसमान में काले-काले बादल उड़ने लगते हैं तब पता चल जाता है कि अब बारिश होगी।

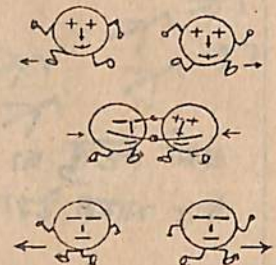
बारिश में मुझे बहुत अच्छा लगता है। कभी धीरे-धीरे पानी गिरता है और कभी बहुत ज़ोर-से बारिश होने लगती है, इससे नदी, तालाब, कुएँ भर जाते हैं। जब थोड़ा-थोड़ा पानी गिरता है तब हम लोग स्कूल भी जाते हैं और खेलते भी हैं। बारिश में भीगना हमें बहुत अच्छा लगता है पर डाँट भी बहुत पड़ती है। मुझे ऐसा लगता है कि पूरे साल भर बारिश होती रहे तो बहुत मज़ा आएगा। चारों तरफ हरियाली ही हरियाली रहेगी।

● स्मिता श्रीवास्तव, पाँचवीं, बालाघाट, म.प्र.

अपनी प्रयोगशाला

इलेक्ट्रोस्कोप

प्रयोगशालाओं में एक यंत्र होता है - इलेक्ट्रोस्कोप जिससे यह पता लगाया जाता है कि किसी चीज़ में स्थिर विद्युत है या नहीं। वैसे तुमने प्लास्टिक के स्केल को कपड़े पर रगड़कर फिर उसे काग़ज़ की चिन्दियों के पास ले जाकर शायद यह पता किया हो। ऐसे में काग़ज़ की चिन्दियाँ स्केल से चिपक जाती हैं। तुमने शायद यह भी पढ़ा होगा कि स्थिर विद्युत के चार्ज (आवेश) दो तरह के होते हैं - धनात्मक और ऋणात्मक। और यह भी, कि कोई भी दो एक-से आवेश एक दूसरे से दूर भागते हैं जबकि कोई भी दो विपरीत निशान वाले आवेश एक-दूसरे को आकर्षित करते हैं। इसी गुर का उपयोग करके इलेक्ट्रोस्कोप बनाया जाता है। यह पता लगाने के लिए कि किसी चीज़ में स्थिर विद्युत के आवेश हैं कि नहीं।



इस बार हम लोग भी एक सरल-सा इलेक्ट्रोस्कोप बनाएँगे। पहले सामान जुगाड़ लो। एक काँच या प्लास्टिक की चौड़े मुँह वाली पारदर्शी शीशी, लोहे की साफ़ कील, गत्ता, टेप या गोंद और काग़ज़, सिगरेट के पैकेट की पन्नी, रेशमी धागा, कंधा और कैंची की ज़रूरत होगी तुम्हें।



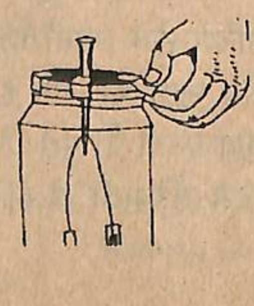
सबसे पहले गत्ते पर शीशी को उल्टा रखकर पेंसिल से उसके मुँह का घेरा बना लो। इस निशान से गत्ते की गोल चक्ती काट लो। इसके बीचोंबीच कील से छेद करके उसे दो-तिहाई अन्दर तक पिरो दो। अब इसे उल्टा रखकर नोक वाली तरफ कील में बीचोंबीच रेशमी धागा बाँध दो। इस तरह कि धागा दोनों ओर लटकता रहे। ये लटकते हुए हिस्से बराबर होने चाहिए।



सिगरेट की चमकीली पन्नी के दो छोटे टुकड़े काट लो। इन्हें टेप की मदद से या किसी और तरीक़े से रेशमी धागे के दोनों लटकते सिरों पर चिपका दो। और फिर पूरे गत्ते को उठाकर उसे शीशी के ऊपर ढक दो। इस तरह, कि सारा ताम-झाम शीशी के अन्दर हो। और टेप से या किसी और जुगाड़ से गत्ते को शीशी से चिपका दो ताकि वह स्थिर रहे।

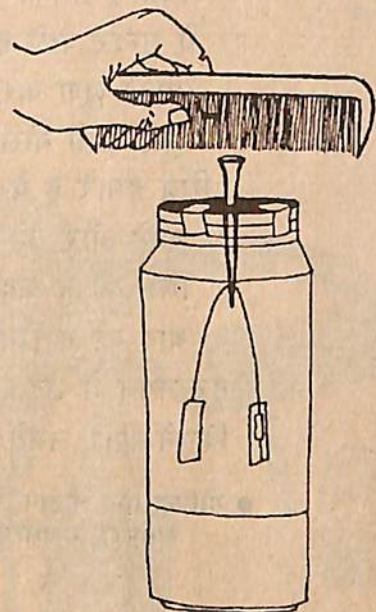


अब प्लास्टिक की कंघी से अपने बाल काढ़ो - कई बार और लगातार, जल्दी-जल्दी। हाँ बाल सूखे होने चाहिए और एकदम खुश्क, तेलसने नहीं। कंघे को कील की टोपी तक ले जाओ। देखो, चमकीली पन्नी के टुकड़ों को क्या हुआ?



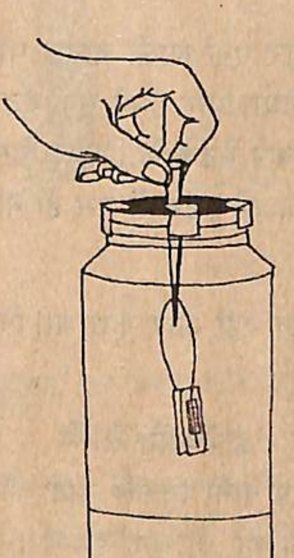


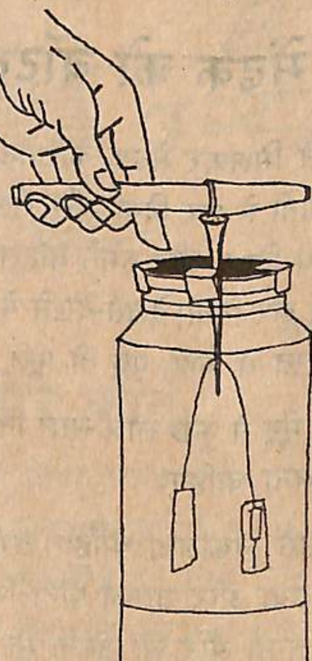
कील की टोपी को अपने हाथ से छूकर देखो। अब क्या हुआ पन्नी को? एक बार फिर बाल काढ़कर कंघा कील से छुलाओ। अब कंघा हटाकर कोई प्लास्टिक का पेन कील से छुलाओ। अब क्या हुआ?



ऐसा क्यों हो रहा है?

दुनिया में किसी भी चीज़ में विद्युत आवेश होते हैं। अधिकतर चीज़ों में धनावेश और ऋणावेश की संख्या बराबर होती है इसलिए आवेश होने, न होने का पता ही नहीं चलता। पर जब हम बालों में कंघा करते हैं तो उनके आपस में रगड़ने के कारण कई सारे धनावेश एक पर और उतने ही ऋणावेश दूसरे पर इकट्ठे हो जाते हैं। यानी कंघे पर कई सारे एक तरह के आवेश और बालों पर उतने ही विपरीत तरह के आवेश इकट्ठे हो जाते हैं। अब जब हम कंघे के दाँतों को कील पर फेरते हैं तो कई सारे एक तरह के आवेश कील और धागे से होते हुए चमकीली पन्नी तक पहुँच जाते हैं। चूँकि एक-से आवेश एक दूसरे से दूर भागते हैं इसलिए पन्नी के टुकड़े भी दूर-दूर हो जाते हैं।





● सभी चित्र : शिवेन्द्र पान्डिया

फिर जब हम कील को हाथ से छूते हैं, तो विद्युत आवेश हमारे हाथ और शरीर से होते हुए बह जाता है। तब पन्नी के टुकड़े वापस सामान्य स्थिति में आ जाते हैं। पर दूसरी बार जब हम पन्नियों को विद्युत आवेश देकर फैला देते है और फिर प्लास्टिक के पेन से कील को छूते हैं, तो पन्नियों को कुछ नहीं होता। क्योंकि प्लास्टिक कुचालक है और विद्युत आवेश को बहने नहीं देता है। ●●

पंछी



● ज्योति जैन, धार, म.प्र.

दूर गगन में उड़ते पंछी
कितने प्यारे लगते पंछी
अपनी ही दुनिया में मस्त रहते
कभी किसी को न तंग करते
कितने सुन्दर कितने न्यारे
लगते हैं सबको प्यारे
ये सुन्दर पंछी हमारे
सबको खुश करते ये
मधुर बोली बोलते ये
मित्र हमारे हैं ये पंछी
छोटे और बड़े पंछी
मित्र को न कैद करें
बाद को न खेद करें
दूर गगन में उड़ते पंछी
कितने प्यारे लगते पंछी

● गोविन्द सिंह चौहान, दसवीं,
रामपुरा, मन्दसौर, म.प्र.

मेंढक को बॉटल चढ़ाई

एक बार मैं और मेरे दोस्त ने मिलकर मेंढक को बॉटल चढ़ाई। मेरे घर पर एक खाली बॉटल पड़ी थी। मैंने उस बॉटल को पानी से भर दिया और उल्टी लटकाकर बाँध दिया। फिर हमने एक मेंढक को पकड़ा और उसे धागे से बाँध दिया। और हमने बॉटल में नली व सुई लगाकर मेंढक के पिछले हिस्से में सुई लगा दी। और पानी चालू कर दिया। देखते-देखते मेंढक पानी से फूल गया और टस-सें-मस ही नहीं हो रहा था। फिर मैंने अपने दोस्त से कहा, यह तो फूल गया है।

और कुछ ही देर में उसके मुँह से कुछ लाल-लाल निकल रहा था। वह खून नहीं और कुछ था। फिर हमने सोचा इसका पानी निकालना चाहिए।

मैंने कहा इसका पानी किससे निकालना चाहिए। तभी मेरे दोस्त ने कहा - इन्जेक्शन से। मैं इन्जेक्शन भी कहीं से कबाड़ लाया और उसका पानी निकाला। धीरे-धीरे सब पानी निकल गया और वह अच्छी तरह चलने-फिरने लगा। और जो उसके मुँह से लाल निकल रहा था, वो बन्द हो गया और वह एक बिल में घुस गया।

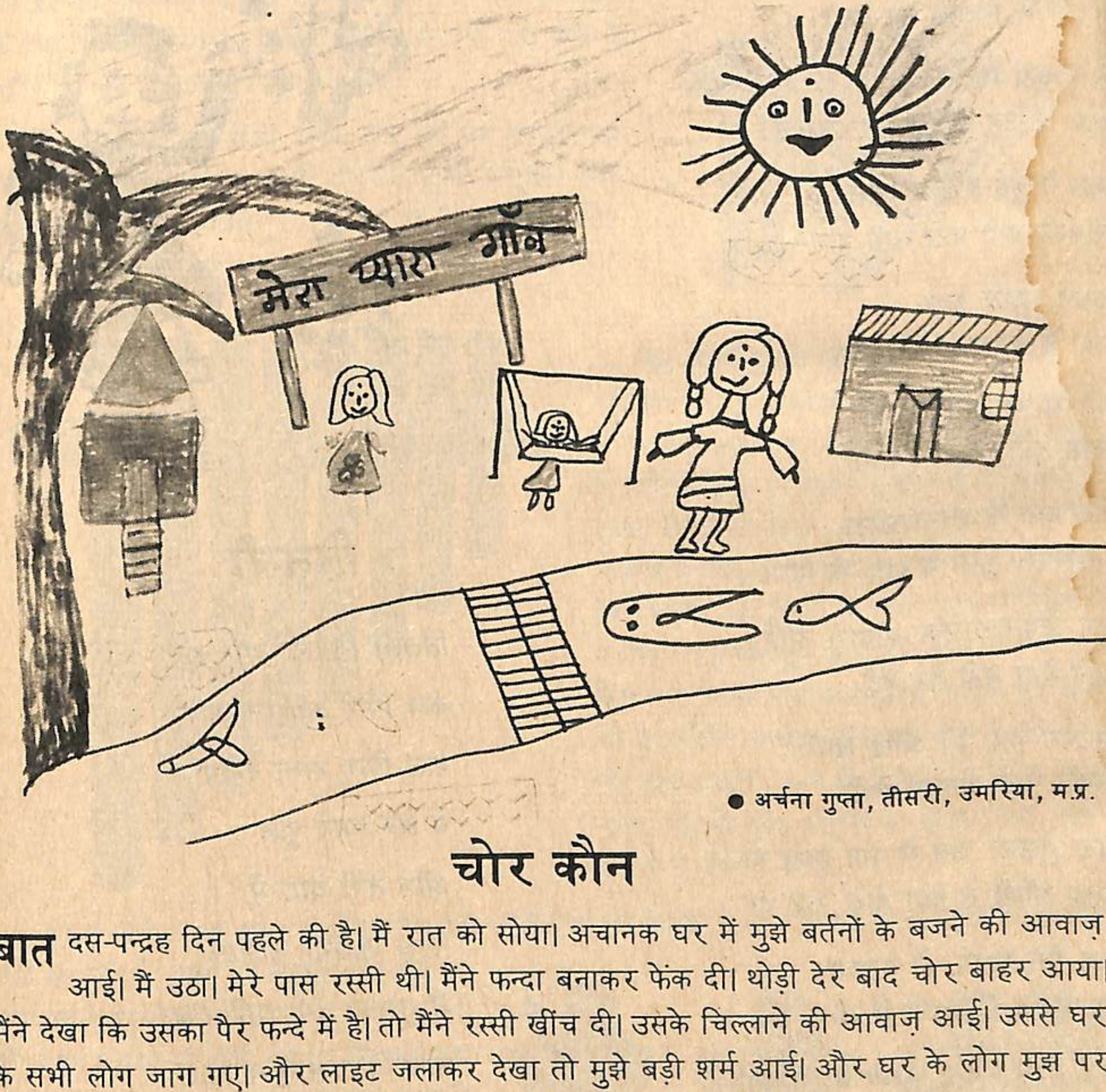
● योगेश जाणी, सन्दलपुर, देवास, म.प्र.



मेरा गाँव

मेरा गाँव बड़ा अलबेला
मैं इसकी मिट्टी पर खेला
इसकी बाईं ओर नदी
नदी के तट पर मन्दिर
मन्दिर पर लगता है मेला
मेरा गाँव बड़ा अलबेला

● झगेन्द्र कुमार, देउरपारा, रायपुर, म.प्र.



● अर्चना गुप्ता, तीसरी, उमरिया, म.प्र.

चोर कौन

बात दस-पन्द्रह दिन पहले की है। मैं रात को सोया। अचानक घर में मुझे बर्तनों के बजने की आवाज़ आई। मैं उठा। मेरे पास रस्सी थी। मैंने फन्दा बनाकर फेंक दी। थोड़ी देर बाद चोर बाहर आया। मैंने देखा कि उसका पैर फन्दे में है। तो मैंने रस्सी खींच दी। उसके चिल्लाने की आवाज़ आई। उससे घर के सभी लोग जाग गए। और लाइट जलाकर देखा तो मुझे बड़ी शर्म आई। और घर के लोग मुझ पर हँसे। क्योंकि वे कोई और नहीं मेरे भैया प्रशान्त थे। वे पानी पीने उठे थे।

● नीरज जैमिनी, धोलपुर, सीहोर, म.प्र.



एक सपना

कल रात मैंने सपना देखा
सपनों में तितली को देखा

मैंने कहा तितली से
क्या मैं उड़ सकूँगा तेरे पंख से

पल में हुई बड़ी हलचल
तितली बनी परी उसी पल

उसने मुझसे कहा
क्या है बालक तुमने चाहा

पल में पलट गई काया
पाया वही जो मैंने माँगा

बन गया मैं इतना छोटा
उसी पल फूलों पे ख़ुद को पाया

पर अचानक एक आवाज़ आई
उठो बेटा बड़ी देर हुई

झटपट जब मैंने आँखें खोलीं
मम्मी पास आकर बोली

बेटा तुझको रात में क्या हुआ था
बन्द आँखों से क्या बोल रहा था

तब मैंने मम्मी को बताया
मम्मी था मैं सपनों में खोया

तब सारा सपना मम्मी को सुनाया
सुनकर उन्हें बड़ा मज़ा आया

● रमेश मोरे, दसवीं, भोपाल, म.प्र.

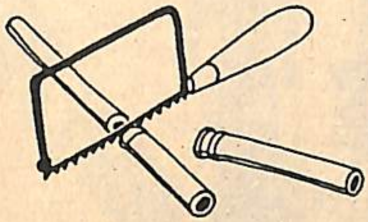


तितली

तितली तितली बाए बाए
कल फिर आए न आए
कल फिर रस्ता देखेंगे
ये तेरे प्यारे फूल
और तेरी याद में
खिल जाएँगी कलियाँ
मैं तुझको दूँगी यही राय
कल फिर आए न आए
तितली तितली बाए बाए।

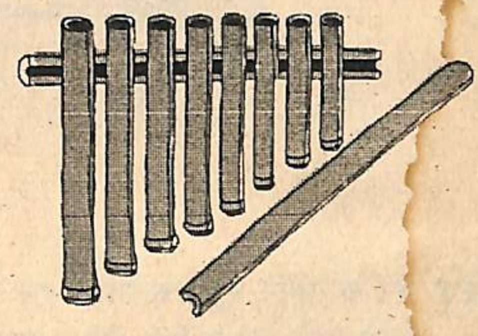
चित्र व कविता ● पद्मजा, सातवीं, भिलाई, म.प्र.

एक नई-सी बाँसुरी

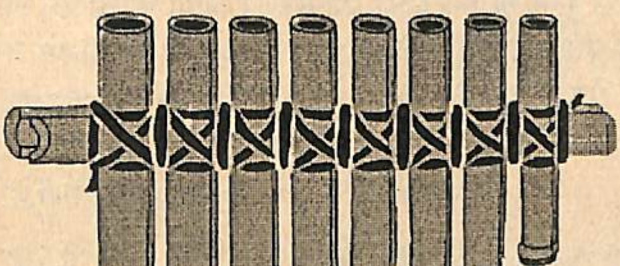


बाँसुरी तुम्हारे लिए नई चीज़ नहीं है। तुमने इसे देखा तो ज़रूर होगा और शायद बजाया भी हो। पर इस बार अपन नई तरह की बाँसुरी बनाएँ और बजाएँ भी ...।

इसके लिए चाहिए होगा, बाँस, पतली रस्सी और आरी। सबसे पहले बाँस के आठ टुकड़े काटने हैं। आरी से काटने पर चोट लगने का डर हो तो किसी बड़े की मदद ले सकते हो। हर टुकड़े की एक काट बाँस की गठान के पास होनी चाहिए। तुम देखोगे कि इस काट के पास बाँस के पाइप का मुँह एक 'दीवार' से बन्द है।

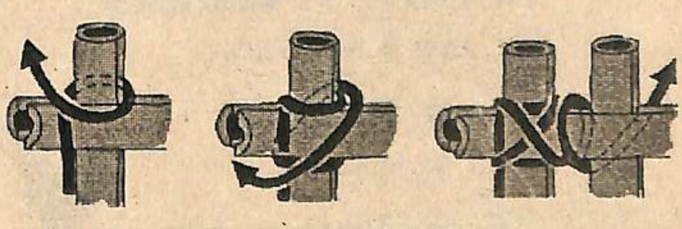


पहला टुकड़ा 23 से.मी. लम्बा काट लो। यह तुम्हारे पास एक तरफ खुले सिरे वाली पहली बाँसुरी है। तुम्हें अब सात और टुकड़े काटने हैं। हर अगला टुकड़ा पहले वाले से एक से.मी. छोटा होगा। इस तरह आठवाँ टुकड़ा लगभग 15 से.मी. लम्बा होगा।



इन आठों टुकड़ों को पास-पास लिटा लो। अब बाँस का एक और टुकड़ा काटो, जो इन लेटे टुकड़ों से थोड़ा ज़्यादा लम्बा हो। ध्यान रहे कि इस टुकड़े के बीच में कहीं भी गठान न हो नहीं तो बाँधने में दिक्कत हो सकती है। इस टुकड़े को लम्बाई की तरफ से बीच से काट लो और उनके किनारों को घिसकर चिकना कर लो। फिर इन दोनों आधे-आधे टुकड़ों के बीच, पहले काटे हुए आठों टुकड़ों को रखकर चित्र में दिखाए तरीके से बांध लो। सभी के खुले मुँह ऊपर की तरफ होने चाहिए और एक सीध में भी। तभी तो बजा पाओगे। खुले सिरों के ऊपर फूँक मारो। ध्यान रहे की फूँक बाँसुरी के अन्दर नहीं, ऊपर मारनी है तिरछे में।

हर टुकड़े से अलग-अलग सुर निकलेंगे। अगर तुम्हें ऐसा लगे कि हर टुकड़े से अलग-अलग तरह की आवाज़ नहीं आ रही तो टुकड़ों की लम्बाई कुछ घटा या बड़ा सकते हो। इस बाँसुरी को बनाने के लिए बाँस की जगह बेशरम की सूखी डंडी का भी इस्तेमाल करके देखो। इस नई बाँसुरी का नाम तरतरी बाँसुरी कैसा रहेगा ......?





● अनिरुद्ध पटेल

कौआ

मेरे घर के सामने महुए के पेड़ में एक कौआ रहता था। वह रोज़ घर में उड़ के आता। हम लोग उसे देखते रहते थे। एक दिन कौवे ने पेड़ में बच्चे दिए। बच्चे भी हमारे घर उड़-उड़कर आया करते। एक दिन की बात है। एक कौआ मेरी बहन के सिर में बैठा तथा उसके हाथ से रोटी ले उड़ा। घर के सब लोग कहने लगे कौवे का सिर पर बैठना बड़ा दोष है। और यह दोष रोने से दूर होता है।

और फिर सब घर के लोग रोने लगे। हम भी रो रहे थे। और कौआ पेड़ पर बैठा रोटी खा रहा था।

● सच्चितानन्द द्विवेदी, पाँचवीं, पुरौना, रीवा,म.प्र.

जोकर

सबको सदा हँसाता रहता
मज़ेदार सर्कस का जोकर।

रंग बिरंगे कपड़े पहने
तरह-तरह से मुँह बिचकाता।

तुरैदार पहनकर टोपी
कान पकड़ता, नाक नचाता।

कभी उछलकर दौड़ लगाता
गिर पड़ता है खाकर ठोकर।

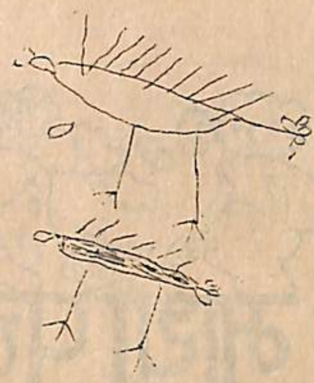
कभी रुलाता कभी हँसाता
मज़ेदार सर्कस का जोकर।

● पारस बाँठिया, ब्यावर, राजस्थान

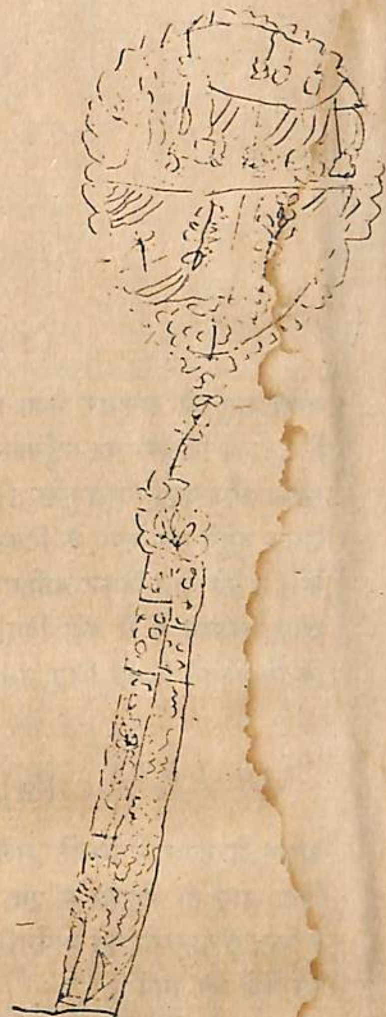


● वीना गोस्वामी, तीसरी, रायपुर, म.प्र.





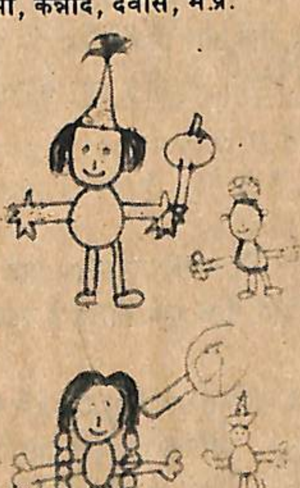
● अनिता सोलंकी, आठवीं, छीपाबड़, होशंगाबाद, म.प्र.



● पिंकी रिठारी, भोपाल



● आशीष शर्मा, कन्नौद, देवास, म.प्र.





● निधि जाधव, पाँचवीं, देवास, म.प्र.

● कबीर पटेल, चौथी, भोपाल, म.प्र.



माथापच्ची

(1)

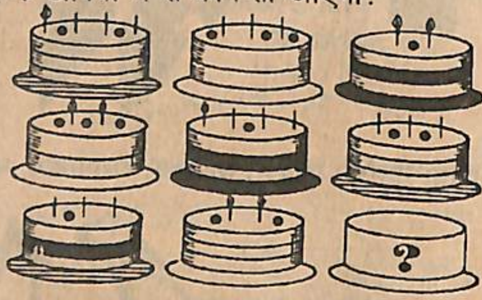
नन्हीं ऋतु को डाकघर भेजा था उसके चाचा ने। उसने टिकट की खिड़की पर पहुँचकर, उचककर खिड़की में से झाँका और कहा, "मुझे कुछ 50 पैसे वाले टिकट चाहिए। उसके दुगुने एक रुपए के टिकट चाहिए और बाकी पैसों के 10 पैसे वाले टिकट चाहिए।" यह कहकर उसने पन्द्रह रुपए खिड़की में से बढ़ा दिए। क्या तुम बता सकते हो कितने-कितने टिकट लिए उसने?

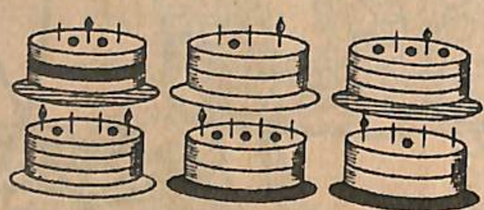
(2)

अगर दो रुपए में मिलने वाले केलों में एक और जोड़ दिया जाए तो भोपाल में एक दर्जन केले के भाव आज के भाव से दो रुपए घट जाएँगे। तो क्या है आज का भोपाल का केले का भाव?

(4)

यहाँ हीरो सर्कस के जोकर की तरह-तरह की टोपियाँ सजी हैं। क्या ऊपर के दोनों लाइनों की जमावट देखकर तुम यह बता सकते हो कि आख़िरी जगह पर नीचे के टोपियों में से कौन-सी आएगी?

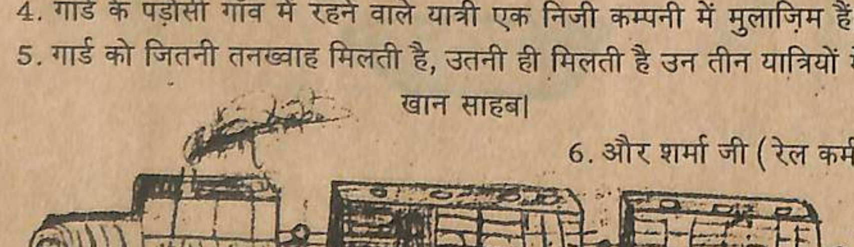




(3)

इटारसी से जबलपुर के बीच चलने वाली पैसेन्जर गाड़ी के एक डिब्बे में तीन ही सवारी बैठी थीं। उनके उपनाम थे शर्मा जी, यादव जी और खान साहब। इत्तेफाक से इस गाड़ी के इंजन ड्राइवर, गार्ड और टिकट चेकर के भी यही उपनाम थे। पर किसका उपनाम क्या था, यह हमें नहीं मालूम। यही तो तुम्हें पता लगाना है, नीचे दिए संकेतों की मदद से।

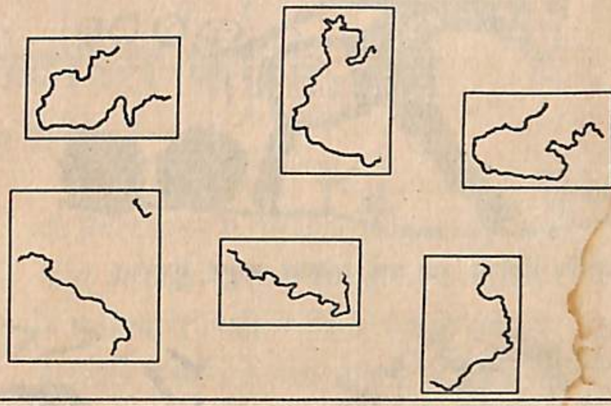
1. यात्री यादव जी जबलपुर में रहते हैं।
2. गार्ड साहब का घर इटारसी और जबलपुर के बीचोंबीच है।
3. और गार्ड साहब के ही उपनाम वाले यात्री रहते हैं इटारसी में।
4. गार्ड के पड़ोसी गाँव में रहने वाले यात्री एक निजी कम्पनी में मुलाज़िम हैं। उनकी तनख्वाह गार्ड से तिगुनी है।
5. गार्ड को जितनी तनख्वाह मिलती है, उतनी ही मिलती है उन तीन यात्रियों में से एक को। ये हैं स्कूल के हेडमास्टर खान साहब।
6. और शर्मा जी (रेल कर्मचारियों में से एक) ने पिछले साल की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में भाला फेंकने में टिकट चेकर साहब को हराया था।



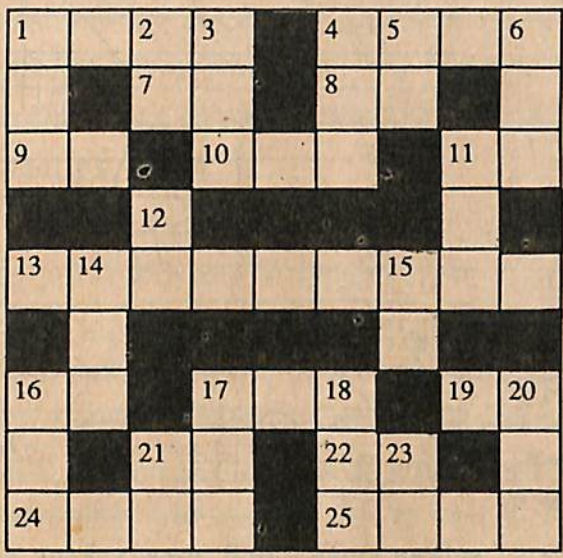
● योगेश कुमार, देवनगर, नरसिंहपुर, म.प्र.

(5)

हमारे पास एक राज्य का नक्शा था। मोलू ने हमारी आँख बचाकर उस नक्शे के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। अब क्या तुम इन छह टुकड़ों को जोड़कर एक राज्य का नक्शा पूरा कर सकते हो?



वर्ग पहेली - 53



संकेत : बाएँ से दाएँ

1. काला करने में है हुनरमन्द (4)
4. नील अगर हो तो कपड़े भी टाँग सकते हैं (4)
7. कल का पका आज खाओ तो क्या कहलाएगा? (2)
8. उल्टे तमगा का धड़ हटाकर शरीर मिलेगा (2)
9. दलाई लामा के पास है, जपते भी हैं (2)
10. चमड़ी जाए पर .... न जाए (3)
11. दूर या नीचे (2)
13. चोरों और भाइयों का मुहावरा (2,2,3,2,)
16. धीमा (2)
17. बेटी का बेटा (3)
19. बता तेरी यह हिम्मत कैसे हुई? (2)
21. सुई का साथी (2)
22. गाय (2)
24. रियासत (4)
25. चौकीदार (4)

संकेत : ऊपर से नीचे

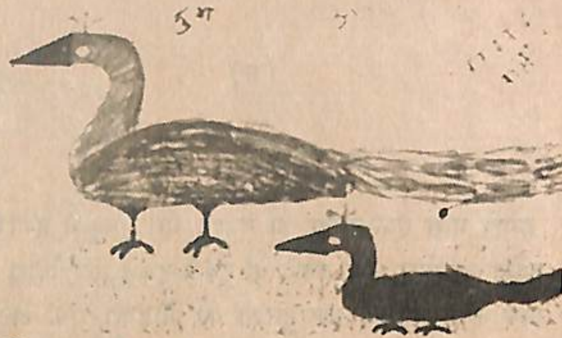
1. इस्लाम धर्म का मूल मंत्र (3)
2. मक्का की मशहूर मस्जिद (2)
3. झापड़ की पावती में दर्द तो होगा ही (30)
4. अगला हिस्सा (3)
5. तलब होती है यानी बुरी आदत लग गई (2)
6. शान्त (3)
11. अचरज (3)
12. दिमाग़ पर ज़ोर डालो (2)
14. दार जी की उलट-पलट में रंगा हुआ है (3)
15. बहुत ही छोटा टुकड़ा (2)
16. नज़ारा (3)
17. दूर-दूर तक सन्देश पहुँचाने के लिए जिसे पीटा जाता है (3)
18. समुद्र (3)
20. लकड़ी छीलने का औज़ार (3)
21. हमला (2)
23. ऊपर खरगोश में गन्ना (2)

● मयाराम सोनकर,
रूदगाँव, राजनांदगाँव, म. प्र.

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें, बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली-53 का हल फ़रवरी, 96 अंक में देखें।



● भार्गव सोनेजी, छह वर्ष, साकवा, भडूच, गुजरात.



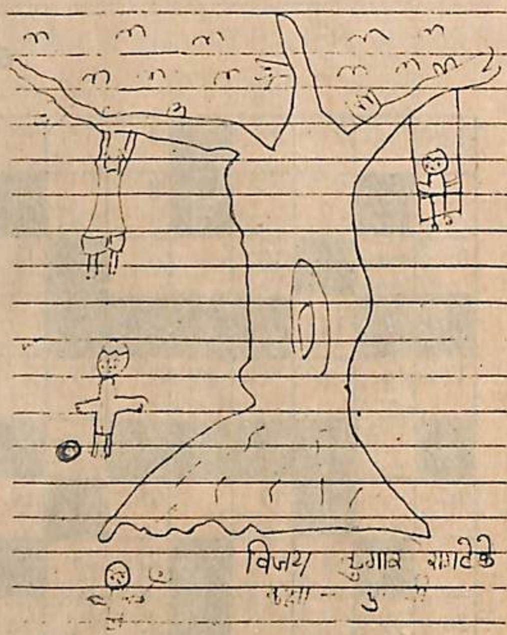
● अरुण विश्वकर्मा, तीसरी, सीहोर, म.प्र.



●प्रियंशा पाल, पाँचवीं,
बैकुन्ठ, रायपुर, म. प्र.



●विनोद यादव, सन्दलपुर, देवास, म. प्र.



● विजय रामटेके, पाँचवीं, सन्दलपुर, देवास, म.प्र.





 ●राजेन्द्र सिंह, आठवीं, टुकराल, उज्जैन, म.प्र.

●नारायण सिंह सोलंकी, भादूगाँव,म. प्र.

सवाल अभिव्यक्ति का है !

● राजेश उत्साही

चकमक के अब तक प्रकाशित 123 अंकों में यह आठवाँ ऐसा अंक है जिसे 'मेरा पन्ना अंक' कहा जा सकता है। चकमक के पहले अंक से ही दो कालम नियमित रूप से प्रकाशित हो रहे हैं। एक है 'माथापच्ची' दूसरा 'मेरा पन्ना'। माथापच्ची पहेलियों का कालम है जबकि 'मेरा पन्ना' बच्चों की अपनी अभिव्यक्ति का। चकमक के हर अंक में जून, 94 तक मेरा पन्ना के चार पेज होते थे, जिन्हें अगस्त, 94 से बढ़ाकर छह कर दिया गया है। कारण है बच्चों की रचनाओं की बढ़ती हुई आवक।

हर महीने हमें ढेर सारी रचनाएँ और चित्र मिलते हैं। इनमें से चयन करने के बाद भी रचनाओं की संख्या इतनी अधिक होती है कि चुनी गई रचना के प्रकाशन में दो से लेकर छह माह या उससे भी अधिक समय लग जाता है। इसीलिए लगभग हर साल एक 'मेरा पन्ना अंक' प्रकाशित करके अधिक से अधिक बच्चों की अभिव्यक्ति सामने लाने की कोशिश रहती है।

इस सन्दर्भ में यह सवाल अक्सर उठता रहा है कि, "क्या बच्चे, बच्चों का लिखा हुआ पढ़ना पसन्द करते हैं?"

इसका सीधा और सटीक जवाब तो यही है कि "हाँ।" पर शायद इतने संक्षिप्त जवाब से काम न चले। इसलिए थोड़ी गहराई में जाकर विचार करना होगा। इस विचार-विमर्श में बच्चे तो शामिल हो ही सकते हैं लेकिन मुख्यतः यह लेख बड़ों (यानी पालक, शिक्षक आदि) को सम्बोधित है।

पिछले साल नेशनल बुक ट्रस्ट ने नागपुर में राष्ट्रीय पुस्तक मेले के दौरान एक बाल साहित्य गोष्ठी का आयोजन किया था। उस गोष्ठी में चर्चा के लिए उक्त विषय भी रखा गया था। चर्चा के लिए एक पर्चा तैयार करने की ज़िम्मेदारी मुझे सौंपी गई थी। इस पर्चे को तैयार करने में ऐसे शिक्षकों, पालकों, लेखकों और अन्य व्यक्तियों से मदद ली गई जो बच्चों और बच्चों के साहित्य से किसी न किसी रूप में सरोकार रखते हैं। यद्यपि चकमक के पहले अंक से अब तक के पिछले दस सालों में ऐसे सरोकारी व्यक्तियों से विभिन्न अवसरों पर और विभिन्न माध्यमों से अनुभवों, विचारों का व्यापक आदान-प्रदान सतत् होता रहा है।

बहरहाल कुछ ने अपने विचार, अनुभव लिखकर भेजे। उन्होंने अपने आसपास के बच्चों तथा अन्य सम्बंधितों से भी इस बारे में बातचीत की थी।

टिमरनी, होशंगाबाद के शिक्षक उमेश चन्द्र चौहान ने अन्य बातों के अलावा लिखा कि, "चकमक के 'मेरा पन्ना' ने बालक को एक चिंगारी दी है। उन्हें कुछ करने की प्रेरणा दी है।"

टिमरनी के पास के ही एक अन्य गाँव राजा बरारी के एक अन्य शिक्षक दीनानाथ विनायक ने लिखा, "बच्चे बच्चों की लिखी रचनाओं को रुचि के साथ पढ़ते हैं। उनको भी इससे लिखने की प्रेरणा मिलती है।"

एकलव्य, पिपरिया के कमलेश भार्गव ने लिखा, "बच्चे बच्चों का लिखा पढ़ते ही नहीं, बल्कि वे उसे अच्छी तरह समझ भी पाते हैं, एवं उसमें कहीं ज़्यादा आनंद का अनुभव करते हैं।"

अरलावदा, देवास के शिक्षक तथा कहानीकार डा० प्रकाशकांत का अनुभव है, कि, "बच्चे अपने साथियों का छपा हुआ काम देखकर प्रेरणा पाते हैं।"

म०प्र० की एक अन्य बाल पत्रिका 'समझ झरोखा' के सम्पादक लक्ष्मीनारायण पयोधि का कहना है कि, "बाल पाठक बाल रचनाकारों की रचनाओं में अपनी भावनाओं को साकार पाते हैं। यही कारण है कि बच्चों की रचनाओं को वे अतिरिक्त उत्सुकता, गम्भीरता और अपनेपन से पढ़ते हैं।"

ग्वालियर के पास एक गाँव में शिक्षक और चकमक की लेखिका गिरिजा कुलश्रेष्ठ का मानना है कि, "बच्चे जितनी आत्मीयता व सहानुभूति अपने हमउम्र रचनाकारों की रचनाओं में महसूस करते हैं उतनी बड़ों की में नहीं।"

लेकिन व्यापक रूप से देखें तो दो-तीन बातों पर ध्यान देना ज़रूरी है। पहली यह कि बच्चे क्या पढ़ें और क्या न पढ़ें यह कौन तय करता है? निश्चित ही बच्चे तो नहीं। यह तय करने का अधिकार आमतौर पर बड़ों ने अपने पास ही रखा है। अव्वल तो बड़े घर में ऐसी पत्र-पत्रिकाएँ, किताबें ख़रीदकर लाते हैं जिनमें 'गागर में सागर' की तर्ज़ पर पूरे परिवार के लिए सामग्री हो। घर के वयस्क अपने मतलब की, रुचि की सामग्री पा सकें, किशोरों के लिए कुछ खेल, कुछ फ़िल्म आदि की सामग्री हो और कुछ बच्चों की भी। अब उसमें भला बच्चों के लिए कितनी सामग्री होगी और उसमें भी बच्चों की लिखी कितनी!

दूसरी बात, यदि बच्चों के लिए अलग से पत्र-पत्रिकाएँ बुलवाई जा सकती हैं या ख़रीदी जा सकती हैं, तो भी एक उपभोक्ता दृष्टि के रहते पत्रिका के रंग-रोगन और पृष्ठों की संख्या के आधार पर ही यह तय किया जाता है कि, कौन-सी पत्रिका ख़रीदने में पैसे का पूरा उपयोग हो सकेगा। इसमें भी ख़रीदने का अधिकार कितने बच्चों के पास है?

तीसरी बात, किताबों या पत्र-पत्रिकाओं की दुकानों पर अच्छा साहित्य कितना उपलब्ध होता है। या उसका प्रदर्शन किया जाता है, जिससे कि बच्चे या इस दिशा में जागरूक पालक विकल्प चुन भी सकें।

चौथी बात, बच्चों का लिखा साहित्य कितना है और वह कितना प्रकाशित होता है। कम से कम हिन्दी में तो वह न के बराबर ही है। जहाँ नामी-गिरामी लेखकों को अपनी किताबें छपवाने के लिए प्रकाशकों के आसपास घूमना पड़ता है या सालों प्रतीक्षा करनी पड़ती है। वहाँ बच्चों के लिखे की क्या बिसात?

पाँचवीं और महत्वपूर्ण बात यह है कि क्या हम बच्चों को कुछ लिखने भी देते हैं? लिखना केवल लिखना भर नहीं है वह अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। लेकिन क्या उनके लिखे हुए में हम अपने 'बड़ेपन' की टाँग नहीं डाल देते हैं- चाहे वह भाषा की बात हो, चाहे व्याकरण की। क्या उनका लिखा एक स्वाभाविक अभिव्यक्ति रह भी पाता है? क्या उनके लेखन के विषय उनकी अपनी सोच के होते हैं? क्या उनके विचारों पर, विषयों पर हमारी प्रेतछाया नहीं होती है?

बच्चे बच्चों का लिखा पढ़ना पसन्द करें - यह इस पर भी निर्भर है कि लिखने वाले बच्चों की रचनाओं के विषय क्या हैं? उनकी शैली क्या है? उनका उद्देश्य क्या है? अगर वे भी वयस्कों की तरह ही उपदेशों, शिक्षा वाली, ऊँचे-ऊँचे आदर्शों वाली रचनाएँ लिखेंगे तो भला उन्हें कौन पढ़ेगा? एक वयस्क पाठक भी उन रचनाओं में अधिक अपनापन और जुड़ाव महसूस करता है, जिनमें उसकी अपनी ज़िन्दगी की परिस्थितियों, हालातों का ज़िक्र हो।

बहरहाल.. इन सवालों के शाश्वत रहते हुए भी अगर 'सचमुच बच्चों का लिखा हुआ' सामने लाया जाए तो अन्य बच्चे उसे ज़रूर पढ़ते हैं। एक उदाहरण है चकमक।

अतंतः इस मुद्दे पर पक्के तौर पर जो कहा जा सकता है, वह यह है कि -

- 'खग जाने खग की भाषा' यानी बच्चे, बच्चों की अभिव्यक्ति को स्वाभाविक ढंग से समझते हैं।
- उन्हें ऐसा आभास होता है कि जैसे वे ख़ुद का लिखा पढ़ रहे हैं।
- बच्चों की रचनाओं में उनके रोज़मर्रा के जीवन की घटनाओं, सच्चाइओं का ज़िक्र बिना किसी लाग-लपेट के होता है।
- इन रचनाओं में शिक्षा और उपदेशों, आदर्शों की घुट्टी नहीं होती है। इसलिए वे इसे सहजता से पढ़ जाते हैं।
- विषयों की सरलता उन्हें न केवल आश्चर्यचकित

करती है बल्कि यह अहसास भी दिलाती है कि लेखन का यह विषय भी हो सकता है।

- हमउम्र बच्चों का लिखा पढ़ते हुए बच्चे अपने अन्दर छिपे रचनाकार को पहचानने की प्रक्रिया से भी गुज़रते हैं। जो उन्हें अपना कुछ रचने और अभिव्यक्ति करने के लिए उत्प्रेरणा और हिम्मत देती है।
- हमउम्रों की रचनाओं में कल्पना का वह पुट भी वे देख पाते हैं, जिसमें विचरने में उन्हें आनंद आता है।
- और एक ज़रूरी बात यह कि दूसरे बच्चों का लिखा उन्हें यह बताता है कि वे भी लिख सकते हैं, उसी भाषा में जिसमें वे सोचते हैं, बोलते हैं - शुद्ध भाषा या व्याकरण के तमाम झंझटों से मुक्त होकर।

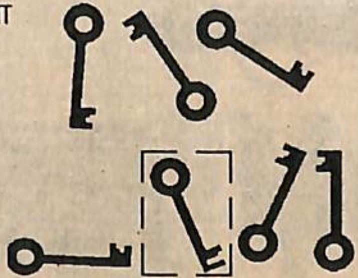
कोई भी निष्कर्ष निकालने या किसी नतीजे पर पहुँचने से पहले एक और ज़रूरी बात। जिस तरह एक लेखक को बच्चों के लिए साहित्य रचने के लिए दुनिया को बच्चों की नज़रों से उनकी समझ से समझना ज़रूरी है, उसी तरह बच्चों की अभिव्यक्ति को सही अर्थों में समझने के लिए बच्चों का 'बच्चा' बना रहना भी ज़रूरी है। अगर वे अपने हमउम्रों की रचनाओं को 'बड़ों' की दृष्टि से देखेंगे तो निश्चित ही निराशा हाथ लगेगी।

और अन्त में यही आग्रह है कि बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति को सामने आने का मौका दें। ताकि वे अपने को बेहिचक अभिव्यक्त कर सकें।

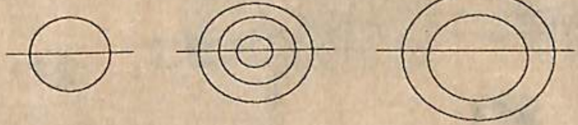
माथापच्ची : हल अक्टूबर, 95 अंक के

1. (1) नीला (2) बैगनी (3) काला (4) हरा (5) जामुनी (6) पीला (7) लाल

3. घेरे वाली चाबी से ताला नहीं खुलता।



4.



5. पहला धावक दूसरे से तेज़ दौड़ता है। वह हर मिनिट में 0.1740 मील ज़्यादा दौड़ लेता है।
6. फ़रवरी। जो महीना छोटा होगा उसमें लोग बोलेंगे भी कम!
7. कुल चार बिल्लियाँ हुईं। चारों बिल्लियाँ आमने-सामने अपनी-अपनी पूँछ पर बैठी हैं।
8. सिर्फ़ एक बार। अगली बार तो 39 में से नहीं 30 में से घटा रहे होंगे!

वर्ग पहेली - 50 : हल

1 अं	त	रं	2 ग		3 म	हो	द	4 य
ध			री		न			ज
का		5 झी				6 उ	7 प	मा
8 र	9 ज	नी	10 शी		11 ह		12 रे	न
	ब		13 त	न	या		हे	
14 ज़	र		धा		15 त	16 र	ज	17 नी
18 है	न	न				बी		ल
री			19 आ		20 ग			कं
21 ला	वा	रि	स		22 ति	र	स	ठ

वर्ग पहेली - 50 का सही हल भेजने वाले पाठक हैं पूर्णिमा, चन्द्रपुर, बिलासपुर और मुक्ति नायक, बीजावर, छतरपुर, मध्य प्रदेश। इनको तीन माह तक उपहार में चकमक भेजी जाएगी।

दुर्घटना

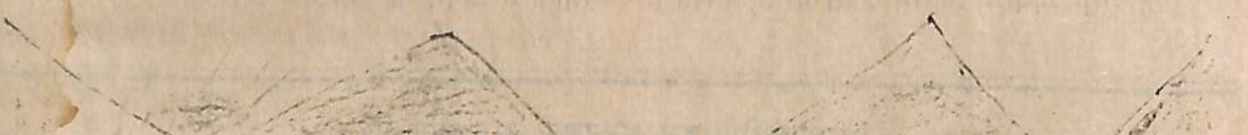
एक दिन मैं और मेरा छोटा भाई साइकिल से घूमने निकले। साइकिल मैं चला रहा था। हमने देखा कि एक लड़का सड़क पर रो रहा था। हमने उससे पूछा, "तुम क्यों रो रहे हो? "

वह बोला, "कुछ लोग मेरी छोटी साइकिल छीनकर खेतों में भाग गए हैं। अब मैं घर जाऊँगा तो मम्मी कहेगी कि साइकिल कहाँ है और वह मुझे मारेगी।"

हम दोनों वहाँ पर साइकिल खड़ी करके खेतों में उन चोरों को ढूँढने गए। खेत के उस तरफ एक घर था। हमने उसमें छिपकर देखा। वहाँ पर दो आदमी हँस रहे थे। उनके पास साइकिल थी। हम वापस आए फिर साइकिल से पुलिसवालों को बुलाकर लाए। पुलिसवालों ने चोरों को पकड़कर खूब मारा और साइकिल उस लड़के को दे दी।

● दिलीप सिंह कुशवाह, भोपाल

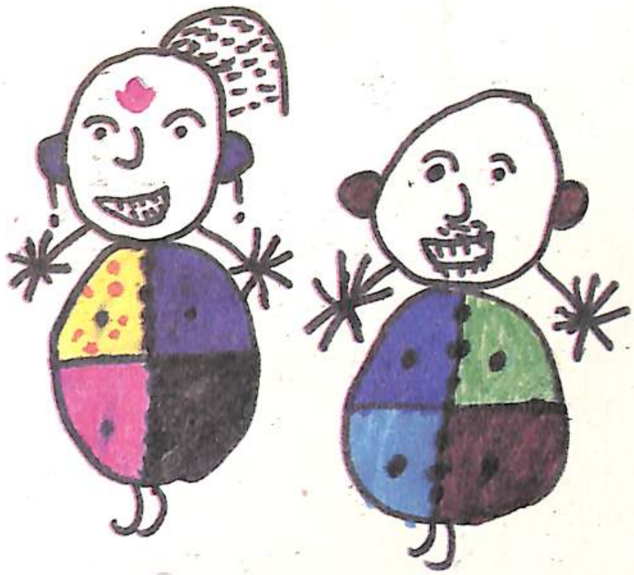
मेरा दोस्त तैरना सिखा



● अनीता वाजपेई, आठवीं, हरदा म.प्र.

एक दिन मैं ओर मेरा दोस्त गोमुक सपड़ने (नहाने) गए। मेरे दोस्त को तैरना नहीं आता था। मैं सपड़ने लगा और मेरा दोस्त पयडी (सीढ़ी) पर सपड़ रहा था कि अचानक मेरे दोस्त का पैर खिसल गया और मेरा दोस्त डूबने लगा। मैंने देखा कि मेरा दोस्त डूब रहा है। मैं तैरकर पानी से बाहर निकला और मैं इधर-उधर देखने लगा। कोई भी ना दिखा। मैंने देखा की मेरे दोस्त की कुप्पी रखी है। मैंने उस कुप्पी को उठाकर मेरे दोस्त को दे दी और मेरा दोस्त उस कुप्पी के द्वारा पानी से बाहर आ गया और फिर हम घर आ गए।

● हरगोविन्द बाँके, छटवीं, भादूगाँव, टिमरनी, म.प्र.



पूजा श्रीवास्तव, दूसरी, सागर, म. प्र.



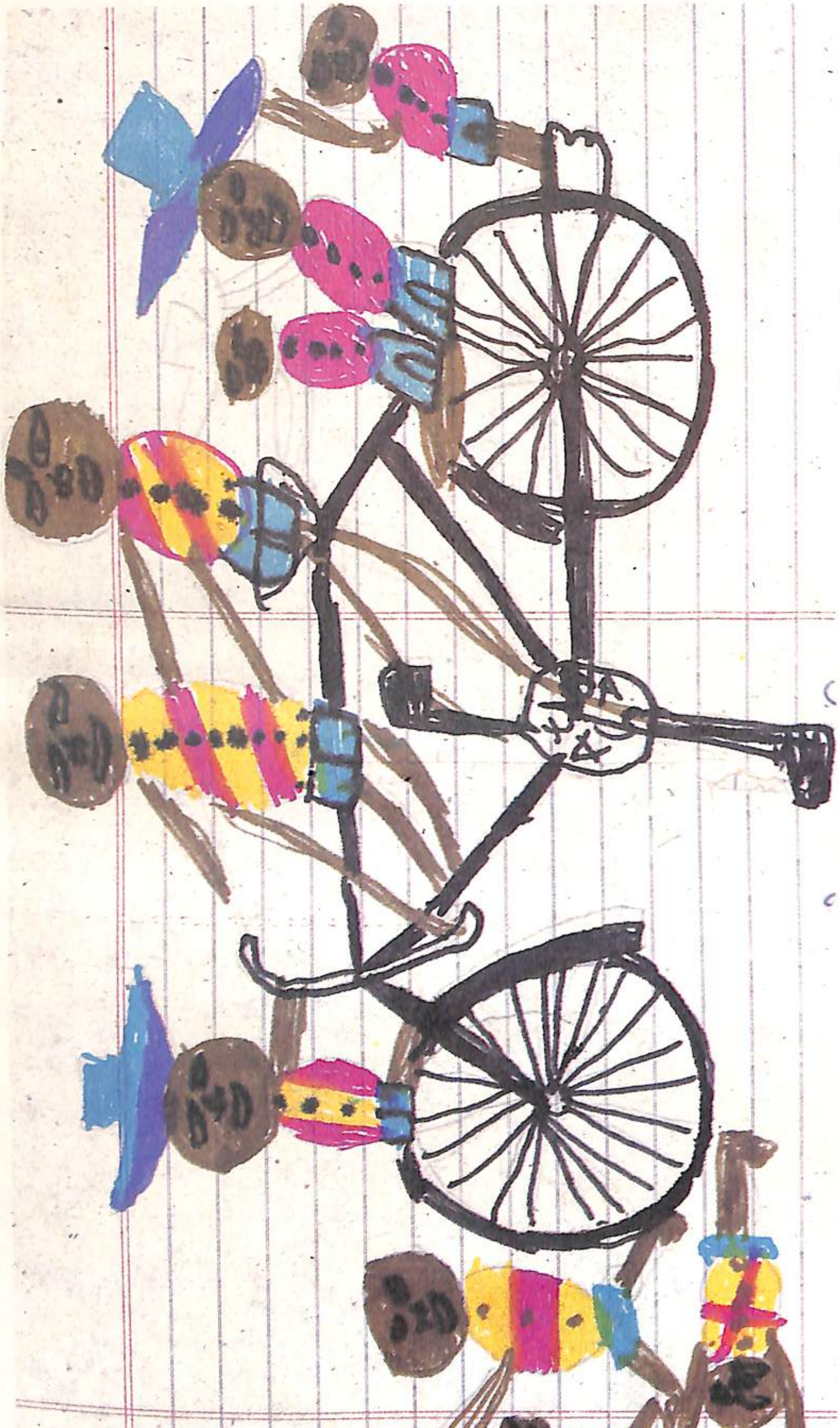
प्रह्लाद सोनी, तीसरी, भोपाल, म. प्र.



छत्रपाल सिंह, छठवीं

चकमक

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/95



मोहम्मद हनीफ, छठवीं, मन्दसौर, म. प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।

संपादक : विनोद रायना